

# नया प्रयास

राजस्थान भू-स्थानिक आंकड़ा केंद्र



भारतीय सर्वेक्षण विभाग  
जयपुर

अंक-5

2020



हिन्दी पत्रिका

## नया प्रयास

अंक 5

वर्ष : 2020

संरक्षक

**श्री महेश चन्द गौड़**, निदेशक, आर.जी.डी.सी. एवं  
अपर महासर्वेक्षक, पश्चिमी क्षेत्र

संयोजक एवं संपादक

**ले० कर्नल सिद्धार्थ शेखावत**, अधीक्षक सर्वेक्षक

संपादन सहयोग

**श्री एम. एल. भाट**, अधिकारी सर्वेक्षक

**श्री एन.एल. मीना**, स्थापना एवं लेखाधिकारी

**श्री जे. पी. मीना**, कार्यालय अधीक्षक

**श्री दिनेश सैनी**, सहायक

**श्री राजकुमार बैरवा**, प्रवर श्रेणी लिपिक

टंकण सहयोग

**श्री राजभूषण मीना**, अवर श्रेणी लिपिक

**कु० कंचन**, अवर श्रेणी लिपिक

मुख पृष्ठ सृजन व कम्प्यूटर सेटिंग एवं सज्जाकार

**श्री ओ.पी. सैनी**, अधिकारी सर्वेक्षक

प्रूफ जॉचकर्ता

**श्री एस. पी. रावत**, मुख्य मानचित्रकार

**श्री जी. जोन्स**, सर्वेक्षण सहायक

प्रकाशन

**राज० भू-स्थानिक आंकडा केन्द्र**

भारतीय सर्वेक्षण विभाग

प्लॉट न० 19-20, सेक्टर-10 विद्याधर नगर, जयपुर-302039

केवल आन्तरिक परिचालन हेतु, बिक्री के लिए नहीं।

पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के व्यक्तिगत विचार हैं जिनसे संपादक मंडल व इस विभाग का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

Email : [raj.gdc soi@gov.in](mailto:raj.gdc soi@gov.in)

ले जनरल गिरीश कुमार, वी.एस.एम.  
Lt General Girish Kumar, VSM

भारत के महासर्वेक्षक  
Surveyor General of India



भारतीय सर्वेक्षण विभाग  
महासर्वेक्षक का कार्यालय  
हाथीबड़कला एस्टेट, पोस्ट बॉक्स नं० 37  
देहरादून-248001 (उत्तराखण्ड), भारत  
SURVEY OF INDIA  
Surveyor General's Office  
Hathibarkala Estate, Post Box No. - 37  
Dehradun - 248001, (Uttarakhand), India



## संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त खुशी है कि राजस्थान भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, जयपुर अपने कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका 'नया प्रयास' के पंचम अंक को प्रकाशित करने जा रहे हैं। यह राजस्थान भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की राजभाषा हिन्दी के प्रति निष्ठा, प्रेम एवं रुचि को शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त करने का एक सराहनीय प्रयास है।

हिन्दी देश की राजभाषा है अतः हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए निरंतर प्रयास करना हम सब का नैतिक दायित्व है। मुझे आशा है कि पत्रिका के प्रकाशन से सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन मिलेगा। साथ ही पत्रिका रुचिकर और ज्ञानवर्धक होने के साथ-साथ सर्वेक्षण से संबंधित क्रियाकलापों से सुसज्जित होगी।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को मेरी हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

  
गिरीश कुमार (वी०एस०एम०)  
लेफ्टिनेंट जनरल  
भारत के महासर्वेक्षक

महेश चन्द गौड़  
निदेशक

**MAHESH CHAND GAUR  
DIRECTOR**



कार्यालय निदेशक  
**OFFICE OF THE DIRECTOR**

राजस्थान भू-स्थानिक आँकड़ा, केन्द्र,  
RAJASTHAN GEO-SPATIAL DATA CENTRE  
भारतीय सर्वेक्षण विभाग / SURVEY OF INDIA  
ग्रेट आर्क भवन -2, सेक्टर - 10  
GREAT ARC BHAWAN-II, SECTOR-10  
विद्याधरनगर, जयपुर - 302039  
VIDYADHARNAGAR, JAIPUR - 302039

## संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि राजस्थान भू-स्थानिक आँकड़ा केन्द्र, जयपुर के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की दृढ़ इच्छाशक्ति एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए उनकी प्रतिबद्धता के फलस्वरूप हिन्दी पत्रिका 'नया प्रयास' का पंचम अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

राष्ट्रभाषा किसी भी देश की पहचान होती है, इसलिए हिन्दी भाषा को अपनाना राष्ट्र को सम्मानित करना है। पत्रिका के प्रकाशन से सरकारी काम-काज में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए प्रेरणा एवं प्रोत्साहन मिलेगा। कार्यालय में इस प्रकार के प्रयासों से जहां हिन्दी में काम करने का वातावरण तैयार होगा, वहीं दूसरी ओर भारतीय संस्कृति की संवाहिका हिन्दी के प्रति अधिकारियों/कर्मचारियों में विशेष लगाव पैदा होगा।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी पत्रिका नया प्रयास का नया अंक राजभाषा के प्रति आपके रुझान को और अधिक विकसित करने में सहायक होगा तथा सुपाठ्य एवं सारगर्भित रचनाओं के साथ-साथ विभागीय गतिविधियों से संबंधित अद्यतन सूचनाएं अपने कलेवर में समेटे हुए एक आकर्षक प्रस्तुति के रूप में हमारे सामने आएगा।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को मेरी हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएं।

(एम. सी. गौड़)

निदेशक/अपर महासर्वेक्षक  
आर0जी0डी0सी0 / पश्चिमी क्षेत्र, जयपुर

## संपादकीय



‘नया प्रयास’ का नया अंक प्रस्तुत करते हुए मैं अत्यंत गौरव महसूस कर रहा हूँ। ‘नया प्रयास’ का यह पांचवां अंक है। यह इस बात का प्रमाण है कि इस कार्यालय ने पत्रिका प्रकाशन की निरन्तरता को बनाये रखे हुए है।

राजभाषा में विभागीय पत्रिका का प्रकाशन बेहद चुनौतीपूर्ण है। विभाग के कर्मचारियों के पास अनुभवों की बहुलता तो है पर कभी-कभी अभिव्यक्ति में अवरोध आ जाता है। वे तकनीकी कार्यों को राजभाषा में उत्साह पूर्वक करते हैं पर रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए कुछ अतिरिक्त प्रयास करने होते हैं। रचनात्मक अभिव्यक्ति में भाषा के अतिरिक्त शिल्प की भी भूमिका होती है। शिल्प अभ्यास से आता है। जबकि कल्पनाशीलता वह गुण है जो कभी तो तुरन्त ही कोई अद्भुत रचना की प्रेरणा दे देती है और कभी-कभी महीनों गुजर जाते हैं, तब कुछ प्राप्त होता है। सर्व विदित है कि बड़े-बड़े आविष्कारों में वैज्ञानिकों की कल्पनाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है।

पत्रिकाओं में रचनाओं के साथ-साथ आवरण सज्जा, टाईप सेटिंग आदि में भी कल्पनाशीलता का प्रभाव देखा जा सकता है। तकनीकी लेखों के साथ एक आशंका सदैव रहती है कि वे कहीं दुरुह न हो जाये। यह संतोष की बात है कि इस अंक के तकनीकी लेख इतने सहज हैं कि उनकी संप्रेषणीयता बनी रहती है। तकनीकी लेख के अतिरिक्त इस अंक में कई ज्ञानवर्धक और रोचक लेखों का समावेश किया गया है। पत्रिका प्रकाशन का प्रयास वैयक्तिक स्तर पर न होकर सामूहिक है। अतः ‘नया प्रयास’ को राजस्थान भू-स्थानिक आंकडा केन्द्र की उपलब्धियों का प्रतिबिंब कहा जा सकता है।

अंत में मैं यह कहना चाहूँगा कि नाम के अनुरूप ‘नया प्रयास’ का यह अंक नया भी है और कर्मचारियों की राजभाषा में रचनात्मक प्रयास भी है। अतः त्रुटियों को गंभीरता से न लेते हुए आप हमें प्रोत्साहित करते रहेंगे, ऐसी हम अपेक्षा रखते हैं।

संयोजक एवं संपादक  
ले. कर्नल सिद्धार्थ शेखावत  
अधीक्षक सर्वेक्षक  
आर0जी0डी0सी0, जयपुर

## अनुक्रमणिका

क्रम सं.	लेख/रचना विवरण	रचनाकार/प्रस्तुत कर्ता	पृष्ठ संख्या
1.	संगति का असर	ओ. पी. सैनी, अधिकारी सर्वेक्षक	6
2.	क्रोध पर नियंत्रण	सी0बी0शर्मा, मुख्यमानचित्रकार (सेवानिवृत्त)	7
3.	अंटार्कटिका महाद्वीप की यात्रा	नजीर मोहम्मद, सर्वेक्षक एवं भवेन्द्र भारद्वाज, सर्वेक्षण सहायक	9
4.	हम दूसरों की आलोचना क्यों करते हैं?	आर.एस.मीणा, स्थापना एवं लेखाधिकारी (सेवानिवृत्त)	11
5.	मेरी बेटी थोड़ी बड़ी हो गई है।	सतीश कुमार यादव, सर्वेक्षण सहायक	13
6.	खेलों का महत्त्व	प्यारे लाल, सर्वेक्षण सहायक	14
7.	संगति (सूक्तियाँ)	ओ. पी. सैनी, अधिकारी सर्वेक्षक	16
8.	प्रार्थना: प्रभु! तुम्हारा विश्वास शक्ति बने, याचना नहीं	नागेन्द्र सिंह, सर्वेक्षक	17
9.	पानी वाली मां	श्रीमती रेखा सैनी	18
10.	मित्रता	सी0बी0शर्मा, मुख्यमानचित्रकार (सेवानिवृत्त)	19
11.	प्यारी बेटियाँ	सतीश कुमार यादव, सर्वेक्षण सहायक	20
12.	मातृभूमि की एकता व अखण्डता	श्री मनुज कुमार, सर्वेक्षक	21
13.	गाँव की याद	प्यारे लाल, सर्वेक्षण सहायक	22
14.	अपने-अपने पड़ाव की तैयारी कर	नागेन्द्र सिंह, सर्वेक्षक	23
15.	साहस	शैलेश सोनी, सर्वेक्षण सहायक	25
16.	आदमी	सी0बी0शर्मा, मुख्यमानचित्रकार (सेवानिवृत्त)	26
17.	मानव निर्माण कला	प्रमोद कुमार, सर्वेक्षक	27
18.	ईश्वर हँसता है	सुरेश चन्द्र रैगर, प्र0 श्रे0 लि0	28
19.	ए नील गगन के चांद	शैलेश सोनी, सर्वेक्षण सहायक	29
20.	पानी प्रकृति की अनुपम देन	शंकरलाल मीना, अधिकारी सर्वेक्षक	30
20.	आबू पर्वतराज	गोविन्द प्रसाद चौधरी	32
21.	हिन्दी भाषा का रुदन और ब्रेक डांस	श्याम सुन्दर, सर्वेक्षक	34
22.	उगते सूरज की पहली किरण	नजीर मोहम्मद, सर्वेक्षक	35
23.	निकोलस जेम्स वुजिसिक व केरोली टकास	नागेन्द्र सिंह, सर्वेक्षक	36
24.	कर्म	शैलेश सोनी, सर्वेक्षण सहायक	37
25.	गाय के दूध का महत्त्व	सुरेश चन्द्र रैगर, प्र0 श्रे0 लि0	38
26.	आखिर कितनी निर्भया	शैलेश सोनी, सर्वेक्षण सहायक	39
27.	सच्चा आनन्द है शिष्टाचार में	दिनेश सैनी	40
28.	टीचर्स	विशाखा पुत्री श्री गोविन्द प्रसाद चौधरी	42

## संगति का असर

ओ. पी. सैनी  
अधिकारी सर्वेक्षक



एक बार एक सीधा-साधा लड़का अपने स्कूल की शिक्षा पूरी करने के बाद कॉलेज में पढने पहुंचा तो उसने कुछ दिनों में कॉलेज में अपने नए दोस्त बना लिए। कुछ दिनों बाद वह अपने दोस्तों के साथ बुरी आदतों में फंस गया और एक सीधा-सादा लड़का बुरी संगति में आ गया। कुछ दिनों बाद जब पिता को यह बात पता चली तो उन्होंने अपने बेटे को बुरी संगति से निकालने के लिए एक युक्ति सोची।

एक अवकाश के दिन पिता ने अपने जवान बेटे को अपने पास बुलाया और अपने लडके से बोले कि जाओ थोडा कोयला और चन्दन ले कर आओ। यह सुनकर उस लडके को कुछ समझ में नहीं आया, पर पिता के कहने पर वह अन्दर चूल्हे से कोयला ले आया और उसको घर में एक चन्दन की छोटी सी लकड़ी भी मिल गयी।

वह अपने पिता के पास आया और बोला-पिताजी मैं चन्दन और कोयला ले आया।

इसके बाद पिता ने कहा- जाओ यह कोयला और चन्दन वहाँ खेत में डालकर आओ तो वह लड़का चला गया और कोयले और चन्दन को खेत में डालकर आ गया और सीधे अपने कोयले से गंदे हाथ को धोने के लिए जाने लगा तो पिता ने उसे रोका और उसे अपने पास बुलाया और बोले की अब हाथ धोकर क्या फायदा तुम्हारे हाथ में तो यह काला दाग लग गया और धोने के बाद भी यह हाथ में दिखेगा।

यह सुनकर वह लड़का अचरज में पड़ गया। उसे देखकर उसके पिता बोले- बेटे जिस तरह से कोयला हाथ को काला कर देता है और उसका दाग धोने के बाद भी नहीं निकलता। ठीक उसी तरह हमारे जीवन में भी यही बात लागू होती है।

अगर तुम अपने जीवन में बुरे लोगों के साथ रहोगे तो तुम भी अपने जीवन में बुरे लोगों की तरह बन जाओगे और अगर तुम उसके बाद उनका साथ छोड़ भी दोगे तो फिर भी तुम पर हमेशा यह दाग लगा रहेगा कि तुम भी उन्हीं बुरे लोगों की तरह हो।

किन्तु अगर तुमने अच्छे लोगों के साथ, गुणवान लोगों के साथ संगति पाल ली, तो तुम्हारा जीवन सफल होने में देर नहीं लगेगी क्योंकि उनके साथ नयी-नयी ज्ञानवर्धक बातें सुनोगे और सकारात्मक विचारों को जानोगे तो तुम्हारी जिंदगी को एक सार्थक दिशा मिलेगी और तुम्हारा जीवन चन्दन की खुशबू की तरह दूर-दूर तक फैलेगा और तुम्हारे कदम हमेशा सफलता की ओर बढ़ते चले जायेंगे।

सफल आदमी बनने के बजाय एक महत्वपूर्ण आदमी बनने की सोचिये।

— अल्बर्ट आइंस्टीन

## क्रोध पर नियंत्रण

सी. बी. शर्मा  
मुख्य मानचित्रकार  
(सेवानिवृत्त)



जो व्यक्ति क्रोध पर नियंत्रण नहीं कर पाता, क्रोध उस पर काबू पा लेता है। क्रोधी व्यक्ति को शेख सादी ने आधा पागल व्यक्ति कहा है। आइए, क्रोध को नियंत्रित करने के विभिन्न उपायों पर नजर डालें।

1. **स्वस्थ रहें** :- नियमित दिनचर्या- घूमना, योग, संतुलित आहार एवं यथोचित आराम के फलस्वरूप आप स्वस्थ रहेंगे। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है तब आप क्रोध के शिकार आसानी से नहीं होंगे।
2. **प्रसन्न रहें** : मुस्कुराइए, हंसिए, ठहाके लगाइए। हंसते समय भोहें नहीं तनती। कभी-कभी इस बात पर भी हंसिए की छोटी-छोटी बातें भी बड़ी परेशानियों का कारण बन जाती है।
3. **सहनशील बनिए** : विरोध, विपत्ति, आलोचना को धैर्य से सहिए। जीवन की यात्रा समतल मार्ग पर नहीं पथरीले एवं उबड़-खाबड़ मार्ग से होकर गुजरती है। जो जीवन की रीत है, उससे क्या खिन्नता? जीवन में भी बंसत एवं पतझड़ आते हैं। आने दीजिए। निहारिए इस प्रकृति के परिवर्तन को व मंद-मंद मुस्कराइए।
4. **अपेक्षाएं कम कीजिए** : अपने आपसे तथा दूसरों से अपेक्षाएं कम करना सीखें। पूर्णता तो केवल ईश्वर का गुण है। मानव तो अपूर्ण है। जिससे स्नेह करते हैं उसकी अपूर्णताओं अथवा कमियों को स्वीकारना सीखें।
5. **प्राणायाम कीजिए** : दिन में दो बार पाँच-पाँच मिनट यदि हम प्राणायाम करेंगे अर्थात् श्वास-नियंत्रण का अभ्यास करेंगे तो धीरे-धीरे हमारी प्रकृति में परिवर्तन होने लगेगा। परिणाम स्वरूप, हम अधिक शांत रहने लगेगें।
6. **अहंकार त्यागे** : अहंकारी व्यक्ति अधिकांशतया क्रोधी बन जाते हैं। सच पूछो तो हम इतने बड़े कभी नहीं बनते कि अहंकार करें। हां गर्व करें, यहां तक तो सही है। ईश्वर तो हम सभी से अधिक शक्तिशाली है, जब वही अहंकारी नहीं है तो हम क्यों हो? यह भी मान लें कि सफलता चमक-दमक, पद, धन, यश कभी स्थाई नहीं होते। जो स्थायी नहीं है, उस पर अहंकार कैसा? अहंकार कम होते ही क्रोध कम होता है। विनम्रता से शांति उत्पन्न होती है।
7. **यथार्थवादी इच्छाएँ रखें** : दुनिया की देखा-देखी अपनी अभिलाषाओं को अनियंत्रित नहीं होने दें। जो अभिलाषा पूरी हो जाए उसकी पूर्ति का उत्सव मनाइए, जो पूरी न हो उसका मूल्यांकन फिर से करें और अधिक प्रयत्न करें किंतु हताश न हो। कोई इच्छा पूरी न हो तो नए लक्ष्य पर ध्यान दें।
8. **बातें खींचे नहीं** : गुस्सा जब आता है तो उसे जल्दी से जाने भी दें। उसे अपने मस्तिष्क में स्थाई स्थान न दें।





9. **व्यक्ति व्यक्ति में अंतर करें :** "गिरा गधे से, गुस्सा कुम्हार पर" कहावत को चरितार्थ न करें । जिसकी गलती है, उससे नाराजगी तो ठीक है कुछ समय तक पर सभी इंसानों के बारे में गलत राय नहीं बनाये। इस दुनिया में अच्छे से अच्छे लोग भी हैं और बुरे व्यक्ति भी हर समय बुरा नहीं होता ।
10. **मस्तिष्क को आदेश देना सीखें :** जब क्रोध आ रहा है तो उस पर नियंत्रण करना उसी समय अच्छा है तनाव के क्षणों में अपने आप को निर्देश देना सीखें, तुम शांत रहो, गुस्सा नहीं करो, धैर्य रखो । बस आदत बन जाएगी । अपने मित्र स्वयं बनाना सीखें ।
11. **अच्छा साहित्य पढ़ें :** धर्म, दर्शन, मनोविज्ञान जैसे विषय तथा महान व्यक्तियों की जीवनी पढ़ें। महान व्यक्तियों ने क्रोध को कैसे जीता, यह जानकर आप को प्रेरणा मिलेगी ।
12. **क्षमा करना सीखें :** "क्षमा बड़न को चाहिए" वाली बात याद रखिए। क्षमतावान व्यक्ति ही क्षमावान हो सकता है। क्षमा करने वाला व्यक्ति महान बन जाता है, अपने आप।
13. **अपने को भी प्यार करें :** दूसरे आपके साथ अन्याय करें, आप तो मत करिए अपने आप से । क्रोध से आप की हानि होती है। अपनी शक्तियों को संजोए। दूसरे की गलती हो उससे आप, अपने आप को दंडित ना करे ।
14. **तोले फिर बोलें :** गुस्से में सबसे अधिक गलती होती है ऐसे शब्द बोलने से जो आग में घी जैसी स्थिति बनाते हैं। गुस्से में भी सोच समझकर धीमी गति से बोलें। चिल्लाएँ नहीं ।
15. **दृढ़ निश्चय कीजिए :** छोटे लोग छोटी चीजों से परेशान होते हैं, बड़े लोग बड़ी बातों में ही रुचि लेते हैं। उड़ते हुए गुन-गुनाइये, चहचहाइए, और फिर मुस्कुरा कर सोचिए। क्रोध पर काबू पाने की इच्छा हो तो इस इच्छा की पूर्ति कोई खास मुश्किल काम नहीं।

पहले आपको खुद बदलना पड़ेगा जैसा कि आप दुनिया में देखना चाहते हैं -

महात्मा गाँधी

## अंटार्कटिका महाद्वीप की यात्रा

नजीर मोहम्मद, सर्वेक्षक  
भवेन्द्र भारद्वाज, सर्वेक्षण सहायक



नार्वे के राल्ड एमंडसन पहले आदमी थे जो सबसे पहले दिनांक 14.12.1911 को दक्षिण ध्रुव तक पहुँचे थे। दक्षिणी ध्रुव को “अंटार्कटिका” के नाम से भी जाना जाता है। यह हमारी पृथ्वी का सबसे दक्षिणी छोर है। दक्षिणी ध्रुव पर पहुँचना काफी कठिन है। उत्तरी ध्रुव समुद्र और समतल समुद्री बर्फ से ढका रहता है जबकि दक्षिणी ध्रुव एक पर्वतीय महाद्वीप पर स्थित है। यह महाद्वीप है अंटार्कटिका। यह बर्फ की मोटी चादर से ढका है। अपने केन्द्र पर तो यह 1.5 कि.मी. से भी मोटी बर्फ से आच्छादित है। दक्षिणी ध्रुव बहुत ऊँचे स्थान पर है। यहाँ अधिकतर बर्फीले तूफान आते रहते हैं। यह उन स्थानों से बहुत दूर है जहाँ वैज्ञानिकों के अनुसंधान स्टेशन है।

अंटार्कटिका में कुछ जगह ऐसी भी है जहाँ पिछले 20 लाख साल से ना तो बर्फ पडी और ना ही बारिश हुई। अंटार्कटिका यूरोप महाद्वीप से 1.3 गुना बड़ा है। अंटार्कटिका दुनियाँ का सबसे बड़ा ध्रुवीय रेगिस्तान है। अंटार्कटिका का 1 % से भी कम हिस्सा ऐसा भी है जिस पर कभी बर्फ नहीं पडी, ना जमी। 21 जुलाई, 1983, अंटार्कटिका के वोस्टोक स्टेशन पर अभी तक का धरती का सबसे कम तापमान—128.50° F रिकार्ड किया गया था। धरती का 90% साफ पानी अंटार्कटिका में ही है, लेकिन बर्फ के रूप में। अंटार्कटिका में आज तक का सबसे ज्यादा तापमान 58.2° F (14.5°C) रिकार्ड किया गया है। पृथ्वी का सबसे शुष्क स्थान भी अंटार्कटिका में ही है, जिसे ड्राई वैली कहा जाता है। आज तक पाए गए 90% उल्कापिण्ड अंटार्कटिका में पाए गए हैं। अंटार्कटिका क्षेत्र में एक अतिविशिष्ट संवृति (फिर्नामिना) दिखाई देती है, जिसे दक्षिण ध्रुवीय ज्योति अर्थात अरोरा ऑस्ट्रेलीज के नाम से जाना जाता है। अंटार्कटिका ही केवल ऐसा महाद्वीप है, जहाँ कोई टाइम जोन नहीं है। जनवरी 1979 में अर्जेन्टीना की एमाईल मार्को पाल्मा दुनिया के सबसे आखिरी दक्षिणी छोर पर जन्म लेने वाली पहली इंसान बनी।

भारत ने वातावरणीय विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान एवं जैविक विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान अभियान अंटार्कटिका भेजकर जनवरी, 1982 से शुरुआत की। जिसके लिए भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय अंटार्कटिका एवं समुद्री अनुसंधान केन्द्र की स्थापना की गयी है। इसका मुख्य कार्यालय गोवा में स्थित है। जिसके तत्वावधान में भारत के विभिन्न अंटार्कटिका अनुसंधान कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है। अंटार्कटिका में अनुसंधान के लिए 1982 में भारत द्वारा स्थापित प्रथम स्टेशन दक्षिण गंगोत्री कुछ समय पश्चात ही क्षेत्र में उठने वाले बर्फीले तूफानों के कारण बर्फ में दब गया। तत्पश्चात भारत ने श्रीमाशीर मरुदीप में अपने द्वितीय स्टेशन मैत्री की स्थापना की जो कि वैज्ञानिकों को उनकी मूलभूत सुविधाएं प्रदान करने में सक्षम है।

राष्ट्रीय अंटार्कटिका एवं समुद्री अनुसंधान केन्द्र, गोवा, द्वारा अंटार्कटिका क्षेत्र में वातावरणीय, जैविक विज्ञान एवं भू-विज्ञान इत्यादि संबंधित अध्ययन हेतु विभिन्न वैज्ञानिक संगठनों के वैज्ञानिकों को भेजा जाता



है। इनमें मुख्य है— भारतीय मौसम विभाग, राष्ट्रीय भैतिक प्रयोगशाला, भारतीय भू-चम्बकत्व संस्थान एवं भारतीय सर्वेक्षण विभाग, इत्यादि। भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा अंटार्कटिका में जैविक अध्ययन सजीव उप जातियों, पृथ्वी सम्बन्धी पर्यावरण प्रणालियों जैव विविधता इत्यादि से संबंधी तथ्यों पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, दसवें अंटार्कटिका अभियान (1990-91) से सृष्टि के इस असाधारण क्षेत्र के मानचित्र उपलब्ध करवाने एवं अन्य वैज्ञानिक कार्यों के लिए राष्ट्रीय अंटार्कटिका एवं अनुसंधान केन्द्र, गोवा से जुड़ा हुआ है। भारतीय सर्वेक्षण विभाग, अंटार्कटिका क्षेत्र के कई भागों का मानचित्र विभिन्न पैमानों पर प्रकाशित करता आ रहा है। राष्ट्रीय अंटार्कटिका एवं समुद्री अनुसंधान केन्द्र, गोवा के तत्वावधान में सत्र 2016-17 में अंटार्कटिका भेजे जाने वाले अभियान दल के लिए निदेशक, ज्योडिय एवं अनुसंधान शाखा, देहरादून, द्वारा हमारा चयन किया गया। हमें 36 वें अंटार्कटिका वैज्ञानिक अभियान दल के सदस्य के रूप में अंटार्कटिका स्थित भारतीय अनुसंधान स्टेशन "मैत्री" जाने का सौभाग्य मिला। दिनांक 25.11.2016 को गोवा में शुरू हुई हवाई यात्रा मुम्बई, नैरोबी, जोहान्सबर्ग होते हुए दिनांक 26.11.2016 को रूस द्वारा संचालित ALCI (Antarctica Logistic Centre International) DH फ्लाइट से 6 घण्टे की यात्रा करके हम शाम 5.00 बजे मैत्री स्टेशन पहुँचे।

लगातार तीन महीने ठहरने की अवधि के दौरान हमने आंवटित क्षेत्र में क्षितिज एवं उर्ध्वाधर नियंत्रण (कण्ट्रोल पोइंट) स्थापित किये। तत्पश्चात् 1:10,000 पैमाने पर 5 मीटर समोच्च अंतराल पर आंवटित क्षेत्र का प्लेन टेबल सर्वेक्षण कार्य किया। शून्य से भी नीचे तापमान में सर्वेक्षण कार्य करने का हमारा पहला अनुभव था। सर्वेक्षण कार्य के अतिरिक्त अभियान प्रमुख द्वारा समय-समय पर बताये गये अन्य कार्यों को पूरा करने में हमने पूरा सहयोग दिया। राष्ट्रीय पर्व 26 जनवरी के सफल क्रियान्वयन के लिए व्यवस्था एवं सफल संचालन के लिए पूरा योगदान दिया।

अभियान दल के सदस्य देश के कोने-कोने से आये थे। उनके साथ मिल-जुल कर रहने और उनकी संस्कृति को जानने का अनुभव अद्भूत एवं अविस्मरणीय रहा। वनस्पति विहिन इस क्षेत्र में मुख्य रूप से स्कुआ, स्नो पेटरल, व्हाइट पेटरल और स्टोर्म पेटरल पक्षी पाये जाते हैं। एडिली नामन पेग्विन की एक प्रजाति यहाँ पायी जाती है।

दिसम्बर से जनवरी तक की अवधि में ग्रीष्म काल रहता है। चौबीस घण्टों सूर्य का प्रकाश देखना एक अविस्मरणीय पल रहा। अंटार्कटिका में आक्सीजन की मात्रा अधिक पाई जाती है, जिस कारण अधिक श्रम करने के बाद भी शरीर में थकान महसूस नहीं होती है।

## हम दूसरों की आलोचना क्यों करते हैं ?

आर. एस. मीना  
स्थापना एवं लेखाधिकारी  
(सेवानिवृत्त)



“हमारी रोजमर्रा की जिंदगी को बेहतर बनाने में जिन लोगों और चीजों की भूमिका है, हमें उनकी तारीफ करनी चाहिए। हमें लोगों के प्रति आभार व्यक्त करने का नजरिया विकसित करना चाहिए और दूसरों से सीखने में खुशी-खुशी तत्पर रहना चाहिए। तभी हम दूसरों की आलोचना की आदत को छोड़ सकते हैं।”

हमें हमेशा वह सब नहीं मिलता जो हम चाहते हैं। अक्सर हमें लगता है, इन सबके लिए बाहरी परिस्थितियां, लोग अथवा दोनों जिम्मेदार हैं। विपरीत परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की तमाम कोशिशों के बावजूद हम खुद को खुश रखने के लिए स्थितियों पर नियंत्रण नहीं कर पाते। इन असहाय स्थितियों के लिए हम अपने आसपास के सभी लोग और स्थितियों को कोसते रहते हैं और उन्हें हमारी समस्याओं के लिए उत्तरदाई ठहराते हैं हम लोगों को दोष देते हैं, उनमें कमियाँ ढूंढते हैं लेकिन स्वयं की गिरेबान में झांक कर नहीं देखते और खुद को उनसे श्रेष्ठ बताते हैं। दूसरों को नीचा दिखाने और गलतियां ढूंढने के इस व्यवहार को आलोचना करना कहते हैं। इससे दूसरों के साथ रिश्ते खराब होते हैं और स्थाई रूप से ऐसा नुकसान होता है उसकी कभी भरपाई नहीं हो पाती।

जब कोई किसी की आलोचना करता है, तो कुछ बातें समान होती हैं— वे दूसरों को सिर्फ अपनी विफलता के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं, सफलता के लिए नहीं। वे मानते हैं कि वे ओरों से बेहतर हैं और उन्हें दूसरों को सुधारने का पूरा हक है। वे यह भी महसूस करते हैं कि उनके आसपास सब कुछ उनकी इच्छा के मुताबिक चलना चाहिए। वे ऐसा व्यवहार करते हैं मानो उनका अपने आसपास के लोगों और स्थितियों पर अधिकार है। लेकिन जब काम उनकी योजना के मुताबिक नहीं होता, तो निरंतर कुंठाओं में भरते चले जाते हैं।

अपनी पहुंच से परे की चीजों पर जरूरत से ज्यादा लगाव रखना और दूसरों पर अधिकार जताने की अतृप्त इच्छा – ये वे दो कारण हैं, जिससे लोग दूसरों की आलोचना करते हैं। लोगों की आलोचना करके व्यक्ति सुख का अनुभव करता है, क्योंकि वे खुद पर कोई दायित्व नहीं लेना चाहते। हां, दूसरो पर अधिकार जताने की ताकत का आनंद लेना चाहते हैं, लेकिन दूसरो की आलोचना करने की प्रक्रिया में वे भारी नुकसान में आ जाते हैं, क्योंकि अपने व्यक्तित्व में कोई सकारात्मक बदलाव नहीं ला पाते और इस तरह आत्मविकास का हर अवसर खो देते हैं। वे अपने भीतर समस्या की जड़ नहीं देखते, क्योंकि खुद को श्रेष्ठ समझते हैं और दूसरों में कमियां ढूंढने में बराबर लगे रहते हैं। कोई व्यक्ति किस तरह बेहतर हो सकता है, जब तक कि वह यह नहीं समझे कि उसमें सुधार की गुंजाइश है।



दूसरों की आलोचना करना एक आदत है, यह व्यक्तित्व की स्थायी विकृति नहीं है। जिस तरह यह आदत आपमें आई है, उसी तरह दूर भी की जा सकती है। इसके लिए आपको महज दूसरों की आलोचना न करने का सजग प्रयास करना है। अपने शब्दों और विचारों पर नियंत्रण रखें और बोलने से पहले दो बार सोचें। दूसरों की आलोचना की आदत को छोड़ने का एक और प्रभावी तरीका है। हमारी रोजमर्रा जिंदगी को बेहतर बनाने में, जिन लोगों और चीजों की भूमिका है, हमें उनकी तारीफ करनी चाहिए। हमें लोगों के प्रति आभार व्यक्त करने का नजरिया विकसित करना चाहिए और दूसरों से सीखने में खुश और तत्पर रहना चाहिए। यदि हम इन दो साधारण बातों का ख्याल रखेंगे, तो हमें भीतर से संतुष्टि मिलेगी और दूसरों की आलोचना की कम से कम वजह मिलेगी।

इस सन्दर्भ में निम्नलिखित दोहे पर मनन अवश्य करें :-

“ बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलया कोय ।  
जो दिल खोजा आपणा, मुझ से बुरा न कोय ॥”

(यह मेरे अपने विचार है)

किसी भी स्थिति में आप अच्छी बात कर सकते हैं ये सबसे अच्छी बात है लेकिन आप आगे चलकर सबसे अच्छी बात करेगे ये गलत बात है और आप कभी भी अच्छी बात नहीं कर सकते हैं ये सबसे बुरी बात है -

थियोपोर रूसवेल्ट

## मेरी बेटी थोड़ी बड़ी हो गई है

(सतीष कुमार यादव)  
सर्वेक्षण सहायक



अब मेरी बेटी थोड़ी सी बड़ी हो गई है।  
कुछ जिद्दी कुछ नकचढी हो गई है।।  
मेरी बेटी थोड़ी ..... ..

अब अपनी हर बात मनवाने लगी है।  
हमको ही अब वो समझाने लगी है।।  
हर दिन नई-नई फरमाईश होती है।  
लगता है कि फरमाईशों की झड़ी हो गई है।। अब मेरी....

अगर डांटता हूँ तो आँखें दिखाती है।  
खुद ही गुस्सा करके रूठ जाती है।।  
उसको मनाना बहुत मुश्किल होता है।  
गुस्से में कभी पटाखा कभी फुलझड़ी हो गई है।। अब मेरी ..... ..

जब वो हसँती है तो मन को मोह लेती है।  
घर के कोने-कोने में उसकी महक होती है।।  
कई बार उसके अजीब से सवाल भी होते हैं।  
बस अब तो जादू की छड़ी हो गई है। मेरी बेटी.....

घर आते ही दिल उसी को पुकारता है।  
सपने सारे उसी के सवारता है।।  
दुनिया में उसको अलग पहचान दिलानी है।  
मेरे कदम से मिलाकार वो खड़ी हो गई है।।  
मेरी बेटी थोड़ी सी बड़ी हो गई है।

महान आत्माओं को हमेशा सामान्य मन से हिंसक विरोध का सामना करना पड़ता है -

अल्बर्ट आइंस्टीन

## खेलों का महत्व

प्यारे लाल  
सर्वेक्षण सहायक



मानव जीवन की सफलता के लिए तीन शक्तियां मानसिक, आत्मिक व शारीरिक के विकास की आवश्यकता होती है जिसके लिए खेलना-कूदना जरूरी है क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। खेलकूद व्यक्तित्व के विकास तथा शरीर को हष्ट पुष्ट बनाने का सुंदर साधक है खेल स्फूर्ति, ताजगी और गतिशीलता के अस्त्र हैं। मानव जीवन में स्वास्थ्य का विशेष महत्व है और अच्छे स्वास्थ्य के लिए खेलों का अपना महत्व है क्योंकि खेल के मैदान में केवल स्वास्थ्य ही नहीं बनता वरन मनुष्य बनता है। खेल खिलाड़ी की आत्मा है और खेल की भावना इस आत्मा का श्रंगार है। खेल की भावना खिलाड़ी को परस्पर सहयोग, संगठन, अनुशासन व सहनशीलता की शिक्षा देती है। जब खिलाड़ी खेल के मैदान में खेलता है तो उसका रोम-रोम पुलकित हो उठता है तथा अपनी सभी समस्याओं से ऊपर उठ जाता है। खेलों में कोई जात-पात व भाषा का भेदभाव नहीं होता है। खेल लोगों को अपनी क्षमताओं का बेहतरीन इस्तेमाल करने, सहकारी टीम प्रयास का हिस्सा बनने, जीतने व हारने का आनंद एवं कई बार दुःख अनुभव करने के बहुत से अवसर उपलब्ध कराते हैं यह प्रतियोगिता लोगों को अपने जीवन में विपरीत परिस्थितियों का सामना करने के लिए तैयार करती है और चुनौती व परिवर्तन की सूरत में डटकर मुकाबला करना सिखाती है। उछलते-कूदते हंसमुख बालकों को जिसने देखा है, उसे पता है की खेलकूद क्या वस्तु है। कबड्डी, मल-युद्ध, गेंद बल्ला, हॉकी, फुटबॉल, वॉलीबॉल, टेनिस, तैरना, दौड़ना, आंख-मिचोली वृक्षों पर चढ़ना गुल्ली-डंडा आदि अनेक प्रकार के खेल हैं। खेलों से व्यायाम व मनोरंजन दोनों ही होते हैं। जिसका मन कहीं पर भी एकाग्र न हो उनका मन खेलों में पुरी तरह लग जाता है। खिलाड़ी अपने आप को भूल जाता है मानव खेल योग-साधन का एक विशेष ढंग है। खेलने वाला व्यक्ति खेलते समय संसार के सारे झंझटों को भूल जाता है, जो निश्चिंत हो जाता है इसलिए, उसके स्वास्थ्य में बड़ी उन्नति होती है, मन सदा प्रसन्न रहता है तथा स्वभाव मधुर बन जाता है व फूर्ति आती है। इसलिए सरकारी नौकरियों में खिलाड़ियों को वरीयता दी जाती है। कई अच्छे खिलाड़ी तो केवल खिलाड़ी-पन के नाते ही नौकरी पाते हैं। खेलना बालकों को भी सबसे प्रिय लगता है। कितनी ही भूख लगी हो, कितना ही आवश्यक कार्य हो, बालक खेलों को कभी नहीं छोड़ते। खेलने में लीन बालक को माता-पिता पुकारते-पुकारते थक जाते हैं पर बालक घर आने का नाम तक नहीं लेते। कई मानव खेलों को पढ़ाई में बाधक समझते हैं परंतु यह उनकी भूल है। खेल से बिल्कुल विमुख रहने वाले स्वयं पुस्तकों के कीड़े विद्यार्थी कई बार अपने स्वास्थ्य से हाथ धो बैठते हैं किंतु हर समय खेलों में व्यस्त रहना भी अच्छा नहीं। परंतु शरीर में स्फूर्ती उत्पन्न कराने के लिए तथा मस्तिष्क को ताजा करने के लिए नियम पूर्ण थोड़ा सा खेलना बहुत आवश्यक है। जो लोग खेल के महत्व को समझते हैं और नियमपूर्वक खेलते हैं वे पुरुषार्थी होते हैं वह दिन भर काम करते हुए थकते नहीं उनकी आयु भी अधिक होती है क्योंकि वे प्रतिदिन खेल कूद कर ताजा हो जाते हैं।



खेलों का सबसे बड़ा लाभ यह है कि उससे लोगों में बांकपन, उदारता और सहनशीलता आदि गुण बढ़ते हैं । ये गुण नैतिक, सामाजिक व राजनीतिक उन्नति के लिए बहुत आवश्यक है। बांके, उदार और सहनशील नेताओं, कर्मचारियों, सैनिकों व कार्यकर्ताओं से ही देश आगे बढ़ता है। खेलों से मनुष्य का ओछापन और संकुचित वृत्ति नष्ट हो जाती है। वैसे तो प्रतिद्वंद्विता अर्थात् मुकाबले में बड़ने चढ़ने का भाव खेलों का एक आवश्यक गुण है पर कभी कभी खेल-खेल में ही संघर्ष व लड़ाई-झगड़े भी हो जाते हैं परंतु यह खेल का अपराध नहीं लड़ने वालों का दोष है। हमें इस दोष को दूर करने का प्रयास करना चाहिए चौपड़, शतरंज, ताश आदि कई खेल घर के भीतर के भी हैं लेकिन इसमें केवल मनोरंजन होता है, व्यायाम नहीं होता अतः ये उतने लाभदायक नहीं । खेलों का वास्तविक उद्देश्य यही है कि सारा दिन कार्य करते रहने या बैठे रहने के बाद लोग दौड़-भाग उछल-कूद वाले खेल खेलें व शरीर को ठीक करें ताकि शारीरिक व मानसिक रूप से मानव स्वस्थ रहें और अपना जीवन स्वस्थ रखें ।

हम सभी अपने जीवन में आविष्कारक हैं हर खोज पर हम सभी यात्रायें करते हैं सभी अपने पथ द्वारा प्रदर्शित होते हैं जो किसी की नकल नहीं होती है और ये दुनिया सबके लिए एक द्वार है जो हर किसी को आगे जाने का एक समान अवसर देता है -

राल्फ वाल्डो इमर्सन



## संगति (सूक्तियाँ)

ओ.पी. सैनी  
अधिकारी सर्वेक्षक



क्रम सं.	सूक्तियाँ	सूक्तिकर्ता
1	हीयते हि मतिस्तात्, हीनैः सह समागतात्। समैश्च समतामेति, विशिष्टैश्च विशिष्टितम् ॥ (हीन लोगों की संगति से अपनी भी बुद्धि हीन हो जाती है, समान लोगों के साथ रहने से समानता बनी रहती है और विशिष्ट लोगों की संगति से विशिष्ट हो जाती है।)	महाभारत
2	संसार रूपी कटु वृक्ष के केवल दो फल ही अमृत के समान हैं; पहला, सुभाषितों का रसास्वाद और दूसरा, अच्छे लोगों की संगति।	चाणक्य
3	संसार एक कड़वा वृक्ष है, इसके दो फल ही अमृत जैसे मीठे होते हैं . एक मधुर वाणी और दूसरी सज्जनों की संगति।	चाणक्य
4	ये तीन दुर्लभ हैं और ईश्वर के अनुग्रह से ही प्राप्त होते हैं. मनुष्य जन्म, मोक्ष की इच्छा और महापुरुषों की संगति।	शंकराचार्य
5	जिसने शीतल एवं शुभ्र सज्जन संगति रूपी गंगा में स्नान कर लिया उसको दान, तीर्थ, तप तथा यज्ञ से क्या प्रयोजन?	वाल्मीकि
6	झुकने वाले के सामने झुकें। संगति करने वाले के साथ संगति करें।	जातक
7	सज्जनों की संगति होने पर दुर्जनों में भी सज्जनता आ ही जाती है।	क्षत्रचूड़ामणि
8	तीर्थों के सेवन का फल समय आने पर मिलता है, किंतु सज्जनों की संगति का फल तुरंत मिलता है।	चाणक्य
9	मनुष्य जिस संगति में रहता है, उसकी छाप उस पर पड़ती है। उसका निज गुण छिप जाता है और वह संगति का गुण प्राप्त कर लेता है।	एकनाथ
10	संसार रूपी विष वृक्ष के दो फल अमृत तुल्य हैं। काव्यामृत के रस का आस्वादन और सज्जनों की संगति।	अज्ञात
11	विद्वानों की संगति से ज्ञान मिलता है, ज्ञान से विनय, विनय से लोगों का प्रेम और लोगों के प्रेम से क्या नहीं प्राप्त होता?	अज्ञात
12	परमेश्वर विद्वानों की संगति से प्राप्त होता है।	ऋग्वेद
13	यदि तुम चाहते हो कि यह निश्चित रूप से जानो कि नरक क्या है तो जान लो कि अज्ञानी व्यक्ति की संगति ही नरक है।	उमर खैयाम
14	अच्छी संगति बुद्धि के अंधकार को हरती है, वचनों को सत्य की धार से सींचती है, मान को बढ़ाती है, पाप को दूर करती है, चित्त को प्रसन्न रखती है और चारों ओर यश फैलाकर मनुष्यों को क्या क्या लाभ नहीं पहुंचाती?	भर्तृहरि

असफलता जीवन का एक हिस्सा है इससे ऽरकर सफलता की राह मत छोड़ो ।

रोसलिन रसेल

## प्रार्थना प्रभु तुम्हारे विश्वास शक्ति बने, याचना नहीं

नागेन्द्र सिंह  
सर्वेक्षक



हे प्रभु ! मेरी केवल यही कामना है कि मैं संकटों से घिरकर भागू नहीं, परंतु उनका सामना करूँ । इसीलिए मेरी यह प्रार्थना नहीं है कि संकट के समय आप मेरी रक्षा करें प्रत्युत मैं तो इतना ही चाहता हूँ कि आप उससे जूझने का बल दें ।

मैं यह भी नहीं चाहता कि जब दुख संताप से मेरा चित व्यथित हो जाए तब आप मुझसे सांत्वना दें। मैं अपनी अंजलि के भाव— सुमन आपके चरणों में अर्पित करता हुआ इतना ही मांगता हूँ कि आप मुझे दुःख विजय करने की शक्ति दें।

2. जब किसी कष्टदायक संकट की घड़ी में मुझे कहीं से कोई सहायता नहीं मिले तो मैं हिम्मत न हारूँ। किसी और स्रोत से सहायता की याचना न करूँ, उन घड़ियों में मेरा मनोबल क्षीण न हो जाए। हे अन्तर्यामी मुझे ऐसी दृढता और शक्ति देना, जिससे कठिन से कठिन घड़ियों में भी संकटों और समस्याओं के सामने दृढ रह सकूँ। आपको हर पल अपने साथ देखते हुए मुसीबतों और परेशानियों को हंसी खेल समझ कर अपने चित्त को हल्का रख सकूँ। मैं बस यही चाहता हूँ।

3. मेरे आराध्य। तुम्हारा विश्वास हमेशा मेरे हृदय मंदिर में दीप—शिखा की तरह अखण्ड अविराम प्रज्वलित रहे। मेरे प्रारब्ध के प्रबल झंझावात, परिस्थितियों की भयावह प्रतिकूलताएँ, स्वयं मेरी अपनी मनोग्रथियां इस ज्योति को बुझा तो क्या, कंपा भी न सके, विश्वास की यह ज्योति हर पल मेरे अस्तित्व में आत्मबल की प्रबल ऊर्जा एवम् तात्कालिक सूझ का प्रकाश उडेलती रहे। यह विश्वास मेरे लिए शक्ति बने, याचना नहीं, संबल बनें, क्षीणता नहीं।

4. कहीं ऐसा न हो कि स्वयं के तमोगुण से घिरकर, तुम्हारे विश्वास का झूठा आडम्बर रचा कर कर्म से विमुख हो जाऊँ, कर्तव्य से मुंह मोड लूँ। चाहे जैसी प्रतिकूलताएँ हो, व्यवहार में मुझे कितनी ही हानि क्यों न उठानी पड़े — इसकी मुझे जरा भी परवाह नहीं है, लेकिन मुझे इतना कमजोर न होने देना कि मैं आसन्न संकटों को देख कर हिम्मत हार बैठूँ और यह रोने बैठ जाऊँ कि मैं क्या करूँ, मेरा सर्वस्व छिन गया।

5. मैं न अहंकारी बनूँ, न ही अकर्मण्य। स्वयं को तुम्हारे चरणों में अर्पित करता हुआ इतनी ही मंशा रखता हूँ कि जीवन संग्राम में रण—बांकुरे योद्धा की तरह जुझारू बनूँ, तुम्हारे विश्वास की शक्ति से भयावह चक्रव्यूहों का वैधन करूँ, उन्हें छिन्न—भिन्न करूँ।

6. प्रभु ! तुम्हारा और केवल तुम्हारा विश्वास ग्रहण कर लोगों ने अविचन अवस्था में रहते हुए भी इतिहास—पुरुष बनने का गौरव हासिल किया है, जीव और संसार की श्रेष्ठतम उपलब्धियां अर्जित की है। मेरी बस यही कामना है कि तुम्हारा विश्वास मेरे लिए वीरता का पर्याय बने, आलस्य नहीं। धीरता का संबल बने, आतुरता की अकुलाहट नहीं। बस इतना ही कृपा करना।

## पानी वाली माँ

श्रीमती रेखा सैनी  
सर्वेक्षक



देशभर में 'पानी वाली माँ' के रूप में प्रसिद्ध अमला रूइया का जन्म महाराष्ट्र में हुआ। सम्पन्न परिवार में जन्मी अमला ने बचपन से ही परिवार में समाज सेवा का पाठ सीखा। उद्योग जगत से सम्बन्ध रखने वाले परिवार में विवाह के पश्चात् उनके जीवन में कोई कमी नहीं थी। एक दिन टेलीविजन पर राजस्थान के अकाल और सूखे से त्रस्त गाँवों की तस्वीर देख उनका मन विचलित हुआ तथा उन लोगों की मदद करने की ठानी।

पहले उन्होंने सोचा कि आर्थिक सहायता की जाए परन्तु जल्द ही उन्हें अहसास हो गया कि यह एक स्थायी समाधान नहीं है। राजस्थान के अधिकांश गाँवों में पानी की समस्या इतनी विकट है कि महिलाओं का पूरा दिन दूर दराज से पानी लाने में निकल जाता है व घर की जिम्मेदारी बालिकाओं पर आ पड़ती है जिससे वे शिक्षा से वंचित रह जाती है।

अमला रूइया ने 'आकर चैरिटेबल ट्रस्ट' की स्थापना की जिसका मूल उद्देश्य इन गाँवों से पानी की समस्या को दूर करना था। इस कार्य में उनकी बेटियों ने पूरा आर्थिक सहयोग दिया। इस संस्था ने प्रत्येक गाँव में चैक डेम बनाने का कार्य प्रारम्भ किया जिसका 60 प्रतिशत संस्था द्वारा तथा 40 प्रतिशत खर्चा गाँव वालों द्वारा उठाया जाता है। इसके पीछे अमलाजी यह उद्देश्य बताती है कि गाँव वाले जब निर्माण में अपना सहयोग देते हैं तो वे हृदय से उस कार्य से जुड़ जाते हैं तथा आगे भी चैक डेम की देखभाल व निर्माण में पूरा सहयोग करते हैं।

प्रारम्भ में इस कार्य में काफी कठिनाइयाँ भी आईं, लोग जल्दी से उन पर भरोसा नहीं करते थे किन्तु अमलाजी पीछे नहीं हटी और संघर्ष करती रही। पहला चैक डेम उन्होंने मण्डावर गाँव में बनाया जो कि सफल प्रयोग रहा। आज राजस्थान में 115 से अधिक गाँवों में 200 से अधिक चैक डेम बनाये जा चुके हैं। इन गाँवों में अब पानी की कोई समस्या नहीं है तथा पर्याप्त मात्रा में जल संसाधन होने से चारे की भी कोई समस्या नहीं है। प्रत्येक घर में मवेशी पशुओं को रखकर दुग्ध, घी से इनकी न केवल जीविका बढी है, बालिकाएँ अब विद्यालय जाने लगी हैं तथा अमलाजी द्वारा देखा गया एक सपना साकार होता दिखता है।

न केवल राजस्थान अपितु हरियाणा, महाराष्ट्र, बिहार में भी इनकी संस्था इसी तरह प्रयासरत है। यदि इस प्रकार के कार्यों में हम सब भी अपनी भागीदारी निभाएँ तो शीघ्र ही देश से जीवन के मूलभूत तत्व 'जल' की समस्या जड़ से समाप्त हो जाएगी।

## मित्रता

सी. बी. शर्मा  
मुख्य मानचित्रकार  
(सेवानिवृत्त)



दोस्ती होती नहीं, भूल जाने के लिए।  
बेशक दोस्त मिलते नहीं, बिखड़ जाने के लिए।।  
लेकिन दोस्ती करके खुश रहोगे इतना।  
कि वक्त ही नहीं मिलेगा, आंसू बहाने के लिए ।।

कई बार यह सवाल उठता है कि दोस्त होते कौन हैं? वास्तव में दोस्त उसी को कहा जाता है जो आपकी जरूरत के समय मदद करें, जिसके साथ आप दुनिया के सारे गम भूल कर कुछ देर खुद को अलग दुनिया में महसूस कर सकें ।

मित्रता के लिए आपके पास धन दौलत, शोहरत, कार, वाहन, पद हो यह आवश्यक नहीं है क्योंकि इन वस्तुओं की चमक दमक आकर्षण से तो आप भीड़ इकट्ठी कर रहे हैं । वे सभी आपके मित्र नहीं है, क्योंकि उस चमक दमक के फीकी पड़ जाने पर वह भीड़ छंट जाती है । अब जो आपके पास बचता है, वह है आपका परिवार, आपका सच्चा दोस्त ।

जिंदगी की ऐसी कोई राह नहीं जहां आपको दोस्त ना मिले। स्कूल, कॉलेज, कॉलोनी, बस, ट्रेन, कार्यालय हर जगह आपके लिए दोस्त ही दोस्त है। बस जरूरत है तो इनमें से सही शख्स की पहचान और सही दोस्त का चुनाव करना जो बहुत ज्यादा जरूरी है। सच्ची दोस्ती का अर्थ यही है कि आपने बिना किसी स्वार्थ भावना के अपने मित्रों को सहयोग किया है ।

आपने जो भी अपने दोस्तों के लिए किया है, उसे भूल जाइए, और यदि दोस्त ने आपके लिए किया है, उसे सदैव याद रखिये। दोस्तों को सम्मान दीजिए। उनकी गैर-मौजूदगी में भी उनकी तारीफ कीजिए। उसकी आवश्यकता के समय उसे शब्द, साधन, श्रम और जो भी संभव हो सहयोग कीजिये। सबसे महत्वपूर्ण है कि एक बार मित्र कह दिया, भले ही आप उसके काम न आ सके परंतु उसे धोखा हर्गिज न दें। अच्छे दोस्त उस हीरे की तरह होते हैं जिनकी चमक कभी खत्म नहीं होती लेकिन यह मत भूलिए, कि बुरे दोस्त शराब की तरह धीरे-धीरे आपकी जिंदगी बर्बाद कर देते हैं।

## प्यारी बेटियां

सतीष कुमार यादव  
सर्वेक्षण सहायक



बेटियां सब के नसीब में कहां होती है।  
रब को जो घर पसंद आए वहां होती है।।  
बोये जाते हैं बेटे।  
पर उग जाती है बेटियां।।  
खाद पानी बेटों को।  
पर लहराती है बेटियां।।  
स्कूल जाते हैं बेटे।  
पर पढ़ जाती है बेटियां।।  
मेहनत करते हैं बेटे।  
पर अव्वल आती है बेटियां।।  
रुलाते हैं जब खुद बेटे।  
पर हंसाती है बेटियां।।  
नाम करें न करें बेटे।  
पर नाम कमाती है बेटियां।।  
जब दर्द देते हैं बेटे।  
तब मरहम लगाती है बेटियां।।  
छोड़ जाते हैं जब बेटे।  
तो काम आती है बेटियां।।  
आशा रहती है बेटों से।  
पर पूर्ण करती है बेटियां।।  
हजारों फरमाइशों से भरे हैं बेटे।  
पर समय की नजाकत को समझती है बेटियां।।

बेटी को चांद जैसा मत बनाओ कि हर कोई घूर-घूर कर देखे लेकिन बेटी को सूरज जैसा बनाओ ताकि घूरने से पहले सब की नजर झुक जाए।

## मातृभूमि की एकता व अखण्डता

श्री मनुज कुमार  
सर्वेक्षक



बात उन दिनों की है जब महाभारत का युद्ध समाप्त हो चुका था और शरशैया पर लेटे भीष्म पितामह सूर्य के उत्तरायण होने और अपनी मातृभूमि को सुरक्षित हाथों में जाने का इंतजार कर रहे थे। आखिरकार वह दिन आ ही गया और हस्तिनापुर नरेश युधिष्ठिर अपने भ्राताओं और भगवान श्री कृष्ण के साथ महात्मा भीष्म से उनके अंतिम उपदेश व आशीर्वाद लेने हेतु आए। तब महात्मा भीष्म ने धनुर्धर अर्जुन से कहा कि वह उस भूमि की रज उनके मस्तक पर लगा दे, ताकि मैं अपनी मातृभूमि का अन्तिम ऋण चुका कर देवलोकगमन कर सकूँ। महात्मा भीष्म ने युधिष्ठिर को सम्बोधित करते हुए कहा कि – “ हे राजन ! एक शासक के लिए अपनी मातृभूमि की रक्षा अन्तिम क्षण तक करने के सिवाय कोई और विकल्प संभव ही नहीं है। अपने देश और अपनी मातृभूमि की एकता व अखण्डता के लिए यदि युद्ध करना पड़े अथवा ऐसा मार्ग चुनना पड़े जो कालांतर में लोकहित में भले ही ना हो, किन्तु चुनना ही चाहिए। मैंने शांति के लिए ही हस्तिनापुर के विभाजन को स्वीकार किया था और कौरवों – पांडवों को अलग-2 राज्य देकर अलग कर दिया था किन्तु यही मेरी अंतिम व सबसे बड़ी भूल साबित हुई जिसका एक मात्र कारण देश विभाजन का निर्णय लिया जाना था ।”

इस प्रकार महात्मा भीष्म ने अपने अंतिम उपदेश में पांडवों को राजनीति, आर्थिक व सामाजिक मूल्यों के सम्बन्ध में दिशा निर्देश देते हुए महाप्रयाण किया, किन्तु उनके इन उपदेशों में मातृ-भूमि अथवा स्वदेश के एकता व अखण्डता को अक्षुण्ण बनाये रखने का भाव दृष्टिगत रहा है।

एक विचार लें, उस विचार को अपनी जिंदगी बना लें, उसके बारे में सोचिये, उसके सपने देखिये, उस विचार को जिए, आपका मन, आपकी मांसपेशियां, आपके शरीर का हर एक अंग, सभी उस विचार से भरपूर हो और दूसरे सभी विचारों को छोड़ दें, यही सफलता का तरीका है।

– स्वामी विवेकानन्द

## गांव री याद

प्यारे लाल  
सर्वेक्षण सहायक



गांव रा गुवाड़ छुट्या, लारे रह गया खेत,  
धोरां माथली झीणी-झीणी, उड़ती बालू रेत।।  
उड़ती बालू रेत, नीम री छाया छूटी।  
फोंफलीया रो साग छुटो, छूटी बाजरी री रोटी।।

आषाढ़ रे महीनें में जद खेत बावण जाता।  
हल चलाता, तेजो गाता, कांदा रोटी खाता।।  
कांदा रोटी खाता, भादवा में काढ़ता 'नीनाण'।  
खेत मायला झुपड़ा में, सोता खूंटी ताण।।

गरज-2 कर मेह बरसतो, खूब नाचता मोर।  
खेजडी रा खोखा खाता बोरडी रा बोर।।  
बोरडी रा बोर, खांवता काकड़िया मतीरा।  
'सरदयां' में जीमता, देशी घी रा सीरा।।

आसोंजां में बाजरी रा, सिट्टा भी पक जाता।  
काती रे महीने में सगला, मोठ उपाड़न जाता।।  
मोठ उपाड़न जाता, सागे तोड़ता गुवांर।  
सर्दी गर्मी सहकर के भी, सुखी हो परिवार।।

गांव के हर एक घर में, गाय भैस रो धीणों।  
घी दूध भी धर का मिलता, वो ही असली जीणो।।  
वो ही था असली जीणो, कदे नहीं पडता था बीमार।  
गांव में ही छोड़ आया, असली जिन्दगी रो सार।।

कहे कवि "प्यारे चौधरी" गांव की आज भी याद सतावे।  
पर एक बार जो समय बीत गयो, अब पाछो नहीं आवे।

## अपने अगले पड़ाव की तैयारी कर

नागेन्द्र सिंह  
सर्वेक्षक



1. राहगीर यहां ललचाई आंखों से मत देख । यह सराय है, तेरा घर तो बहुत दूर है। लंबी मंजिल चलकर ही वहां तक पहुंचेगा। यह सराय एक रात विश्राम के लिए है। सो भले मानस की तरह प्रवेश कर, शालीनता के साथ रह, सज्जनता के साथ रास्ता पकड़।
2. भूल गया भुलक्कड़! ऐसी न जाने कितनी सरायों में तू ठहर चुका है। आगे लंबी मंजिल तय करके ही वहां तक पहुंचेगा। लंबी मंजिल पार करने के लिए ऐसी न जाने कितनी सरायों में तुझे ठहरना होगा । ललचाने की आदत छोड़। मुसाफिर यदि ठहरने की सुविधा को पर्याप्त न मानकर सराय पर अपना अधिकार जताने लगे तो उस मूर्ख की चारों ओर निंदा ही होगी, कुछ हाथ थोड़े ही लगने वाला है ।
3. सराय वाले का शुक्रिया अदा कर, जिसने एक रात ठहरने के लिए सुविधा बनाई, सुविधापूर्वक रहा, चैन की नींद सोया, सुविधाओं को भोगा, सेवकों की सहायता प्राप्त की । इतना मिल गया बहुत है। इसे अनुभूत कर संतोष कर । प्रसन्न हो, कृतज्ञ बन और शांति के साथ अपने अगले पड़ाव की तैयारी कर।
4. गड़बड़ मत फैला। पंलग मेरा, कमरा मेरा, रसोइघर मेरा, बर्तन मेरे, कर्मचारी मेरे, सराय मेरी, मालिकी मेरी, मैं ही सबका मालिक, यह सब मेरी संपत्ति है, इस पागलपन को छोड़ । कोई सुनेगा तो क्या कहेगा? रात भर ठहरने वाला मुसाफिर सराय पर अपनी मालिकी जताता है। समझाने पर मानता नहीं । मेरी-मेरी ही कहे चले जा रहा है। अरे ! भला यह सराय तेरी कैसे हो सकती है, यह बनाने वाले की है। यहां के कर्मचारी तैरी संपत्ति कैसे हो सकते हैं ? इनका अपना अस्तित्व है। इन्हें खिलाने –संभालने वाला दूसरा है। मूर्ख! बेकार की तरह बातें मत कर, सुनने वाले सुन लेंगे तो बुरी दुर्गति बनाएंगे।
5. बगीचा देख लिया तो ठीक पर ये तेरा नहीं है। दूसरों की तरह तू भी सुध ले और इतनी देर तक मौज मनाने के सौभाग्य को सराहता हुआ आगे बढ़ चल । तेरा घर दूर है। इसका मार्ग लम्बा है। अपनी मंजिल के मील गिन-गिन कर चलने को कमर कस। रास्ते के जलपान का प्रबन्ध कर और हल्का-फुल्का हो कर चल। सराय की चीजें उठा कर चलेगा तो उसके बोझ तले तेरी गर्दन टूट जाएगी, फिर कोई उसे ले जाने क्यों देगा ?
6. नेक मुसाफिर की तरह यहां जब तक ठहरना है ठहर! भलमनसाहत बरत ! हंस और हंसा। प्यार दे और ले । छोड़ सके तो एसी याद छोड़ जा जो पीछे वालों के मन में सराहना के साथ उठती रहे। ले जा सके तो यहां वालों की श्रद्धा और सद्भावना लेता जा । लेने और देने के लिए इतनी ही काफी है।
7. विदेशी मोह का जाल मत बुन। यहां न तू किसी का है और न कोई तेरा । रैन-बसेरे में कितने आते हैं। रात ठहरते हैं, चले जाते हैं। रात भर हंस-बोल लिए, मिल-जुलकर रह लिए, यही क्या कम है?





8. मैं उसका, वह मेरा—इस ममता में बंधेगा तो रोना और रूलाना ही पल्ले पडेगा। मत रो, मत रूला। हंसते हुए रह—हंसाता हुआ जा—इसी में तेरी गरिमा है। मोह नहीं—प्यार कर। मोह में बंधन है, प्यार में मुक्ति। मोह अधिकार मांगता है, प्यार उत्सर्ग में संतुष्ट होता है। असंतोष छोड़ कर संतोष कर। मनचले मचलना छोड़। जिस दुकान पर खिलौने दिखाई दिये, वहीं मचलने लगे। जिस दुकान पर मिठाई दिखाई पडी—वहीं अड गए। इस बचकाने पन से क्या बनेगा?

यह मेला है। यहां सब अनोखा ही अनोखा है। देख और खुशी से उछलता—कुदता अपने घर की राह ले। यह जलपरी का बगीचा है। एक से बढ़ कर एक फूल खिला है। देखने और खुश होने के लिए है। छूना और तोड़ना सख्त मना है। गलती करने वालों को सख्त से सख्त सजा भुगतनी पडती है। मुसाफिर अपनी मंजिल को याद रख। सफर के उद्देश्य को मत भूल। सरायों में ठहरता हुआ आगे चल। लालच किया और अधिकार जमाया तो बुरी तरह मारा जाएगा।

कभी आपने कोशिश किया और फिर भी असफल रहे कोई बात नहीं, फिर से दुबारा प्रयास करें फिर से एक बार असफल, लेकिन वह असफलता पहले से बेहतर होगी, फिर यही बार बार प्रयास आपको सफल बना देगा –

सैमुअल बेकेट

मुश्किलें जरूर हैं, मगर ठहरा नहीं हूं मैं  
मंजिल से जरा कह दो, अभी पहुंचा नहीं हूं मैं  
कदमों को बांध न पाएगी, मुसीबत कि जंजीरें,  
रास्तों से जरा कह दो, अभी भटका नहीं हूं मैं  
सब्र का बांध टूटेगा, तो फ़ना कर के रख दूंगा,  
दुश्मन से जरा कह दो, अभी गरजा नहीं हूं मैं  
दिल में छुपा के रखी है, लड़कपन कि चाहतें,  
मोहब्बत से जरा कह दो, अभी बदला नहीं हूं मैं  
साथ चलता है, दुआओं का काफिला  
किस्मत से जरा कह दो, अभी तनहा नहीं हूं मैं..

## साहस

शैलेश सोनी  
सर्वेक्षण सहायक



भयभीत हो के व्यर्थ में,  
निष्प्राण जीवन मत बिता।  
याद रख बिन साहस के,  
है जीवन एक मृत चिता।।

साहस के ही जोर पर,  
सिकंदर ने था जग जीता।  
याद रख बिन साहस के,  
है जीवन एक मृत चिता।।

तेरे भीतर का,  
ये डर ही।  
रख देगा तेरी,  
दुनिया उजाड़ के।।

भर अदम्य साहस,  
पक्षी ऊँचा है उड़ा।  
हाथ पर यू हाथ धर,  
कोई नहीं आगे बढ़ा।।

एक नन्हा,  
सा अंकुर भी।  
है निकला देख,  
धरा को फाड़ के।।

साहस के ही जोर पर,  
राम छुड़ा लाए थे सीता।  
याद रख बिन साहस के,  
है जीवन एक मृत चिता।।

## आदमी

सी. बी. शर्मा  
मुख्य मानचित्रकार  
(सेवानिवृत्त)



भव्य कोठी के बरामदे में शानदार कीमती कार खड़ी जिसके पास बेहतरीन ड्रेस पहने प्रभावशाली व्यक्तित्व व कोठी के मालिक मुख्य दरवाजे तक चहल कदमी करते हुए मोबाइल फोन पर किसी से हंसते हुए बातें कर रहे हैं।

मुख्य दरवाजे पर एक दीन-हीन व्यक्ति हाथ में झाड़ू लिए प्रकट होता है। अनुनय भरे शब्दों में वह कहता है, “सेठजी, सुबह से बाहर सड़क पर सफाई कर रहा हूँ, आसपास कहीं पानी नहीं है। कृपया पानी पिला दीजिए।”

मोबाइल पर बातचीत में व्यवधान सेठ जी थोड़ा रूष्ट हो जाते हैं। टालते हुए कहते हैं, अभी कोई आदमी नहीं है।” हाथ जोड़कर वही आदमी फिर कहता है, “सेठजी कुछ देर के लिए आप ही आदमी बन जाइए।

बहुत भीड़ है तेरे शहर में, जिधर देखो उधर आदमी।

तू तो परखी है, तू ही बता, कितने इनमें है आदमी ?

हज़ार योद्धाओं पर विजय पाना आसान है, लेकिन जो अपने ऊपर विजय पाता है वही सच्चा विजयी है।

- गौतम बुद्ध

## मानव निर्माण कला

प्रमोद कुमार  
सर्वेक्षक



यदि आप अपने जीवन को हीरे के समान मूल्यवान दिव्य गुणों से संपन्न देव तुल्य बनाना चाहते हैं तो यह छोटा सा नुस्खा अपनाइए ।

### सामग्री

सत्यता के फूल, संस्कार मिलने के पते, शुद्ध विचार का घी, उदारता का अर्क,  
मधुरता का शहद, ईमानदारी की जड़, संगठन के फल, परोपकार के बीज,  
ईश्वर-अल्लाह सेवा का बुरादा, ज्ञान का रस, रहमदिल की गिरी,  
त्याग का जल, स्नेह की फली, सहयोग की बूटी ।

### सामग्री मिलने का स्थान

ये वस्तुएं आपको आत्मा के बाजार में मिल जायेंगी । यदि कोई वस्तु न मिल सके तो परमात्मा को याद करने से अवश्य मिल जायेंगी ।

### निर्माण करने की विधि

सभी वस्तुएं प्राप्त हो जाने पर इन्हें मन की हांडी में मिलाकर चरित्र के बर्तन में भर लें

### सेवन विधि

यह दवा आप सुबह-शाम बुद्धि रूपी चम्मच से संतोष के मधु में मिलाकर सेवन करें ।

### परहेज

क्रोध की मिर्च, अहंकार की खटाई, लोभ की छाछ, बेईमानी का नमक, कटु वाणी का तेल, अभद्रता का घी और पर-निंदा का मसाला न खायें ।

**नोट-** यदि आप उपरोक्त विधि से दवा का प्रयोग करेंगे तो अवश्य ही तन एवं मन दुरुस्त और जीवन सफल हो जाएगा ।।

दूसरों के दुःख पर अपनी खुशी का निर्माण करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए ।

— महात्मा बुद्ध

## ईश्वर हंसता है

सुरेश चन्द्र रैगर  
प्र०श्रे०लि०



प्रत्येक प्राणी हंसता और रोता रहता है यही क्रम उसका जीवन भर चलता है अर्थात् एक पल रोना, एक पल हंसना है । खासतौर पर हंसना और रोना ही चलता रहता है लेकिन पहली दफा तब, जब एक डॉक्टर या वैध किसी रोगी के माता –पिता अथवा उसके परिजनों से कहते हैं कि आप चिन्ता पत करो तुम्हारे इस रोगी को जल्दी ही अवश्य ठीक कर देंगे ।

उस समय डाक्टर की यह बात सुनकर ईश्वर मुस्कराते हुए कहता है— “मैं इस रोगी को स्वर्ग लोक में ले जाने हेतु यमदूतो को भेज चूका हूँ और ये कहते हैं कि हम इसे बचा लेंगे”।

दूसरी बार ईश्वर तब हंसता है, जबकि लोग आपस में बड़ी भयकरता के साथ अपनी –अपनी धन सम्पत्ति, जमीन जायदाद, जोरू आदि के लिए झगड़ते और ,खून खराबा करते हैं।

ईश्वर उस समय गम्भीरता से सोचता है कि सम्पूर्ण संसार मेरा बनाया हुआ है, इसका मैं मालिक हूँ । लेकिन ये मुख्र प्राणी संसार की इन वस्तुओ को ही मेरी –मेरी कह रहे हैं। इन तुच्छ वस्तुओं पर हमेशा राज करना चाहते हैं।

हिन्दी मेरी भाषा है,  
हिन्दी मेरी आशा है।  
हिन्दी का उत्थान करना,  
यही मेरी जिज्ञासा है।

हिन्दी की बोली अनमोल,  
एक शब्द के कई विलोम।  
हिन्दी हिन्द हिमालय पर  
शोभित,  
हर्षित होते बोल के सोम।

मीठी बोली अद्भुत वाणी संग

## ए नील गगन के चाँद

शैलेश सोनी  
सर्वेक्षण सहायक



ए नील गगन के चाँद सुन,  
अभी उम्र हैं मेरी छोटी।  
तुझसे ज्यादा गोल है,  
माँ के चूल्हे की रोटी।।

तेरी मद्धम-मद्धम चाँदनी,  
इस धरा से बड़ी है दूर।  
इससे कहीं हसीन है,  
माँ के चेहरे का नूर।।

वहाँ दूर सितारों की बस्ती में,  
जहाँ मेरे बाबा रहते है।  
ऐसा मुझसे आते – जाते,  
गाँव के लोग कहते हैं।।

रमजान के पाक महीने में,  
तेरी प्यारी मुन्नी रोती।  
देख ले झर झर बह रहें,  
उसकी आँखों से मोती।।

क्यूँ ना तुझे ही तोड़कर,  
माँ के सूने माथे पर धर दूँ।  
उसके सूखे अधरों पे,  
पहले सी हंसी फिर भर दूँ।।

## पानी प्रकृति की अनुपम देन

शंकर लाल मीना  
अधिकारी सर्वेक्षक  
(सेवानिवृत्त)

पानी पृथ्वी का सर्व विदित पदार्थ है, लेकिन यह असाधारण भी है। इस गंधविहीन, रंगविहीन और स्वादविहीन पदार्थ की रासायनिक प्रकृति अद्वितीय है। पृथ्वी पर यही एक मात्र पदार्थ है जो तीनों अवस्थाओं—ठोस, तरल और गैस में पाया जाता है। अन्य पदार्थों के विपरीत जब यह जमता है तो इसका आयतन घटता नहीं बढ़ता है और यह हल्का हो जाता है। जमने पर पानी का आयतन 9 प्रतिशत बढ़ जाता है। यही कारण है कि बर्फ पानी पर तैरती है। पानी के टैंक में बर्फ की शिला डालने पर डूबती नहीं क्योंकि बर्फ का वजन पानी की तुलना में 9/10 ही है, इसलिए बर्फ की शिला का 1/10 भाग पानी के ऊपर दिखाई देगा शेष 9/10 भाग पानी के नीचे रहेगा।

पानी का स्थायित्व बेजोड़ है। यह चीजों को सुगमतापूर्वक घोल सकता है और रासायनिक ऊर्जा भी पैदा करता है। अन्य पदार्थों के बनिस्पत पानी ज्यादा उष्मा सोखता और उत्सर्जित करता है, ऐसा इसलिए है क्योंकि पानी की रासायनिक प्रकृति अद्वितीय है। यह सर्वविदित है सब पदार्थ अणुओं से बनते हैं। पानी के एक अणु में दो परमाणु हाइड्रोजन के व एक परमाणु ऑक्सीजन का होता है। यदि हाइड्रोजन को ऑक्सीजन के साथ मिलाया जाए तो ये मिलकर प्रतिक्रिया करेंगे तथा ऊर्जा उत्सर्जित होगी व पानी बनेगा। हाइड्रोजन और ऑक्सीजन से मिलकर जो बन्धन बनेगा उसको तोड़ना बहुत कठिन है। अतः यह कहा जाता है कि पानी का स्थायित्व बहुत-बहुत अधिक है। हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के अणु जब संयोग करते हैं तो ऊर्जा निकलती है। यदि आधा कि.ग्रा. शुद्ध हाइड्रोजन चार कि.ग्रा. शुद्ध आक्सीजन से किया करती है तो साढ़े चार कि.ग्रा. पानी बनेगा और इससे जो ऊर्जा पैदा होगी वह 60 वाट के बल्ब को 325 घण्टे तक चालू रख सकती है।

### पानी सार्वभौमिक साल्वेंट

पानी को सर्वभौमिक साल्वेंट माना जाता है। पानी की घुलनशीलता अन्य सब तरलों से अधिक है। अतः पानी जहां भी जाता है, जिधर से भी जाता है अपने साथ बहुत से खनिज, रसायन और पोषक तत्व घोलकर ले जाता है। यदि पानी में यह घुलनशीलता की क्षमता न होती तो जीवन ही संभव न होता क्योंकि घुलनशीलता से पानी जीवधारियों और पौधों को पोषक तत्व पहुँचाता है जिससे जीवन चलता है।

पानी सार्वभौमिक साल्वेंट होने के कारण सर्वथा शुद्ध पानी प्राप्त करना करीब-करीब असम्भव है, क्योंकि इसमें अन्य पदार्थ घुले रहते हैं। वर्षा के पानी में वातावरण की गैसों घुली रहती हैं। समुद्र के पानी में सैंकड़ों कार्बनिक-अकार्बनिक यौगिक पदार्थ घुले रहते हैं। करीब आधे से ज्यादा तत्व पानी में घुले मिलते हैं।



यहां तक कि जो पानी हम पीते है इसमें भी कई खनिज तथा लवण घुले रहते हैं। समुद्र, नदी, नहर, तालाब सभी असंख्य तत्वों का घोल ही है, जिससे ही जीवन संभव हुआ है। पृथ्वी पर उपलब्ध 90 प्रतिशत पानी सामुद्रिक पानी है। समुद्र का पानी लवणीय होने के कारण पीने योग्य नहीं है। यह आश्चर्यचकित करने वाली बात है कि समुद्र के पानी का सारा नमक निकालकर पृथ्वी की सतह पर फैला दें तो 152 मीटर मोटी परत बन जाएगी।

**ज्ञातव्य:** साइबेरिया, रूस में स्थित लेक बैकल विश्व में शुद्ध पानी के सबसे बड़े स्रोत के रूप में जानी जाती है। 636 किमी लम्बी व 79 कि.मी. चौड़ी इस झील की औसत गहराई 744 कि.मी. है।

### महत्वपूर्ण तथ्य:

1. पृथ्वी पर 11 प्रतिशत कुल शुद्ध एवं पीने योग्य पानी भू-जल से प्राप्त होता है जो 800 मीटर गहराई तक उपलब्ध है तथा उपयोग हेतु निकालने योग्य है।
2. अत्यन्त कम मात्रा में उपलब्ध इस बहुमूल्य प्राकृतिक संशाधन/स्रोत के अन्धा-धुन्ध, अविवेकशील व नासमझी-भरे दोहन और अति दोहन के कारण जल की मात्रा एवं गुणवत्ता दोनों का बड़ी तेजी से रिक्तिकरण और क्षरण हो रहा है।

ओ. पी. सैनी  
अधिकारी सर्वेक्षक

1. उपदेश देना सरल है – अमल करना कठिन है।
2. खर्च करना सरल है – कमाना कठिन है।
3. शत्रु बनाना सरल है – मित्रता निभाना कठिन है।
4. विवाह करना सरल है – निर्वाह करना कठिन है।
5. वचन देना सरल है – पालन करना कठिन है।
6. काम बिगाड़ना सरल है – काम बनाना कठिन है।
7. उधार बेचना सरल है – वसूल करना कठिन है।



## आबू पर्वत राज

गोविन्द प्रसाद चौधरी  
सर्वेक्षण सहायक



मैं कहाँ लग करूँ बड़ाई, इस आबू पर्वत राज की.....

छटा अनोखी हरीयाली की, पार ब्रह्म अनुदान है।

सूर्यास्त बिन्दु पर लोग खडे, जहाँ छिपता दीखे भान है।।

वहाँ भक्ति का गुणगान है, भीड जहाँ लगती सभी समाज की

मैं कहाँ लग.....

माउण्ट आबू की कठिन चढ़ाई जिसका अन्त न पार है।

एक चढ़ाई चढे यार, फिर दूजी आगे तैयार है।।

यहाँ ईश्वर के इकतयार हैं, और झाइवर उस्ताज की।

मैं कहाँ लग.....

पर्वत की कंदरा में मन्दिर मात अर्बुदा देवी का।

दूर-दूर से आवे यात्री, दर्शन पावे देवी का।।

गुणगान करे वहाँ देवी का, जहाँ छटा अनोखी ताज की।

मैं कहाँ लग.....

शंकर मठ का देखो नजारा, शिवलिंग बडा महान।

बड़ी जोर की भीड लगे और भक्त करे गुणगान है।।

वहाँ सब ही का कल्याण है, कृपा शिवशंकर महाराज की।

मैं कहाँ लग.....

जैन मन्दिर देलवाड़ा में, जिसका अजब नजारा है।

कला-कौशल का गजब नमूना, सबको लगता प्यारा है।।

जैसे स्वर्ग लोक ही सारा है, कला वह कारीगर उस्ताद की।

मैं कहाँ लग.....

पीस गार्डन हमने देखा, देखत आँखे चकराई।

तरह-तरह के फुल खिले, खुशबू देखो मकराई।।

'ओम' ध्वजा वहाँ है फहराई, जय हो शान्ति के राज की।

मैं कहाँ लग.....

राजस्थान का गुरुशिखर, कर कैलाश को मात रहा।

हाईहेस्ट पर्वत पर देखो, पुलकित मन सबका गात रहा।।

कैमरा बता सबकी औकात रहा, छवि फौज के रैडार की।

मैं कहाँ लग.....



वाह—वाह नक्की झील, आप भी कैसा सुन्दर ताल है।  
 तरह—तरह की नाव तैर रही, केवट करै कमाल है।।  
 सुन्दर फव्वारों की चाल है, खाने को सलाद प्याज—फ्रुट की।  
 मैं कहाँ लग.....

अम्बाजी का मन्दिर सुन्दर, बना हुआ गुजरात में।  
 सोने के ऊपर लगे कलश जो, चम—चम चमके रात में।।  
 सब करे आस्था माता में, छवि देखी वहाँ गुजरात की।  
 मैं कहाँ लग.....

गब्बर टेम्पल माताजी का, वहाँ की भी क्या बात है।  
 उड़न खटोले चलै हवा में, वैज्ञानिक करामात है।।  
 सुन्दर मौका लगा हाथ में, बात यह याद रहेगी आज की।  
 मैं कहाँ लग.....

चारों तरफ की सुन्दरता, यह म्हारे मन को भाती है।  
 आवागमन लगा पिकनिक का, दुनिया दर्शन पाती है।।  
 यहाँ दुनियाँ नहीं अघाती, छटा प्रकृति के समाज की।  
 मैं कहाँ लग.....

आखूँ, अंजीर, करौंदे और फूले खाओं मक्का के।  
 भूट्टे लो गुजराती भाई सिके सिकाये मक्का के।।  
 खेत दिखाये मक्का के, वहाँ आदिवासी समाज की।  
 मैं कहाँ लग.....

गोविन्द पुत्र भगवान सहाय जी, नमन करू बार—बार जी।  
 माउण्ट आबू की भूमि का, करू बार—बार सत्कार जी।।  
 यहाँ वर्षा बेसुमार जी, यहाँ कृपा इन्द्र महाराज की।  
 मैं कहाँ लग करू बड़ाई, इस आबू पर्वत राज की ।।

कमान से निकला तीर और मुँह से निकली बात कभी वापस नहीं आती।

— अन्य स्रोत

## हिन्दी भाषा का रूदन और ब्रेक डांस

श्याम सुन्दर  
सर्वेक्षक



हिन्दी पखवाड़ा आते ही हिन्दी भाषा को लेकर रूदन किया जाने लगता है और सभी से इसकी उम्मीद की जाती है, लेकिन मैं हिन्दी भाषा को लेकर रोने और विलाप करने की स्थिति से बाहर हूँ। मैं क्यों रोऊँ भला ? संसार की दो नम्बर की भाषा रोती हुई अच्छी नहीं लगती। सब हँसेगें कि इतनी बड़ी भाषा है फिर भी रो रही है।

मेरी भाषा का दिवस, शोक दिवस की तरह क्यों मनें ? 60-70 करोड़ लोगों की भाषा तो किसी एटम बम से भी नहीं मरने वाली। इतनी बड़ी भाषा का ऐसी रिरियाहट से मेल नहीं बैठता। अगर हिन्दी वाले मिलकर एक सुर में “जय हिन्दी” बोल दें तो पूरे संसार की समझ में आ जाएगा कि इधर हिन्दी रहती है। सो अब हिन्दी का शिकायत काउन्टर बन्द करें और गर्व से हिन्दी बोलें और लिखें। अगर शुद्ध भी नहीं है तो भी क्या हर्ज है ? अंग्रेज कौन सी शुद्ध अंग्रेजी बोलते हैं ? अंग्रेजी को एक झटका लगा तो वह “ब्रेग्जिट-ब्रेग्जिट” जपने लगी और इधर न जाने कितने झटके लगे और आए दिन लगते रहते हैं।

हिन्दी अंगद का पांव है। जब उसे रावण नहीं हिला सका, तो अहिरावणों की क्या बिसात ? कुछ डरे हुए डराने लगते हैं कि अंग्रेजी हिन्दी को हिला रही है लेकिन अंग्रेजी स्वयं हिली हुई है, वह किसी और को क्या हिलाएगी ? हिन्दी भाषा की छवि मीना कुमारी की तरह रूदन करती हुई बना दी गई है जबकि वह हेलेन और कैटरीना की तरह उल्लास और हर्ष से भरी है। हिन्दी वालों ने हिन्दी को घूँघट में छिपाकर सिर्फ “सुनते हो जी” कहने में लगा दिया। अरे! 21वीं सदी में काहे का घूँघट और काहे का पर्दा ? हिन्दी को अब ब्रेक डांस, सालसा, धमाल और कमाल करने दो। हिन्दी का रोल और चाल बदलने दो।

**चाल बदलेगी तभी तो ताल बदलेगी।**

संभव की सीमा जानने का केवल एक ही तरीका है असंभव से भी आगे निकल जाना।

— स्वामी विवेकानंद

## उगते सूरज की पहली किरण

नजीर महोम्मद  
सर्वेक्षक



उगते सूरज की पहली किरण.....

करती नव जीवन का संचरण,  
प्रतिबिम्ब है चलायमान जीवन का।  
प्रतिबिम्ब है जीवन के कलरव का,  
उगते सूरज की पहली किरण।।

उम्मीद है नये जीवन के सृजन की,  
आशा है नये जीवन के पलवन की।  
भरोसा है जीवन रूपी उपवन की,  
उगते सूरज की पहली किरण।।

अपनी जिम्मेदारी का अहसास दिलाती  
कर्म में ही अटूट विश्वास कराती।  
जीवन के हर पहलू में उल्लास जगाती,  
उगते सूरज की पहली किरण।।

कूँजी है जीवन की चुनौतियों से पार पाने की,  
रोशनी है जीवन को उजाले से पाट जाने की।  
मिसाल है जीवन समर में लड़ जाने की,  
उगते सूरज की पहली किरण।।

उगते सूरज की पहली किरण.....

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है।

—महात्मा गांधी

## निकोलस जेम्स वुजिसिक व केरोली टकास (अमेलिया सिंड्रोम व हाथ न होने के बावजूद विजय गाथा)

नागेन्द्र सिंह  
सर्वेक्षक



निकोलस जेम्स वुजिसिक का जन्म 4 दिसम्बर, 1982 को मेलबोर्न, आस्ट्रेलिया में एक अप्रवासी परिवार में हुआ, जो यूगोस्लाविया से आस्ट्रेलिया आया था। निक को "अमेलिया सिंड्रोम" की दुर्लभ बीमारी थी, जिसमें हस्त व पाद अविकसित ही रहते हैं। निक की माता ने अस्पताल में निक को ग्रहण करने से मना कर दिया था, क्योंकि ऐसे बच्चे को देख पाना भी मुश्किल था। कुछ समय बाद निक के माता-पिता ने उसे "ईश्वरीय कृपा" के रूप में स्वीकार कर लिया।

निक का बचपन सामान्य रूप से गुजरा। विद्यालयी जीवन में भी बड़े बच्चों द्वारा छेड़छाड़, परेशान करने वाली परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। निक इन 17 वर्षों में अपने अविकसित शरीर (हस्त व पाद) से परेशान हो चुके थे। पाँव के ऑपरेशन के पश्चात अंगूठे व बाकी हिस्से को दो भागों में विभाजित किया गया ताकि निक "मोबाईल" संगजक व अन्य चीजों को पैर से पकड़ कर कार्य कर सकें। 17 वर्ष की आयु में निक ने आत्महत्या करने की असफल कोशिश की। तब उनकी माँ ने उन्हें एक पत्रिका में "केरोली टकास की लघु प्रेरक कहानी" दिखाई।

केरोली टकास हंगरी के सैनिक थे, जो कि अच्छे निशानेबाज थे। वे 1939 के ओलम्पिक में हंगरी के लिए निशानेबाजी दल में थे व पूरे देश को उनसे स्वर्ण पदक की उम्मीद थी।

एक दुर्घटना में (1938) में टकास का दायाँ हाथ बुरी तरह जख्मी हो गया और उन्हें निशानेबाजी दल से बाहर कर दिया गया। टकास ने गुप्त रूप से सघन प्रशिक्षण करते हुए बाएँ हाथ से निशानेबाजी में महारथ हासिल की व राष्ट्रीय प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीत कर सबको चौंका दिया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण 1940 व 1944 के "ओलम्पिक गेम्स" नहीं हुए लेकिन 1948 के ओलम्पिक खेलों में वे शामिल हुए। उन्हें वहाँ देख कर पूर्व विजेता ने उनसे पूछा - 'तुम यहाँ क्या कर रहे हो?' टकास ने कहा - "मैं यहाँ सीखने व नया कीर्तिमान बनाने आया हूँ। टकास ने स्वर्ण पदक जीतकर यह साबित कर भी दिया। 1952 के ओलम्पिक खेलों में भी "केरोली टकास" ने स्वर्ण पदक जीता। तब कार्लोस (पूर्व स्वर्णपदक विजेता) ने उनसे कहा कि "तुम बहुत कुछ सीख चुके हो। अब तुम दुनिया को सिखाओं।" कार्लोस की यह बात सुन कर "टकास" ने अगले कई वर्षों तक हंगरी के लोगों को निशानेबाजी के लिए ओलम्पिक के लिए तैयार किया।

केरोली टकास की इस कहानी को पढ़ कर निक ने निराशा का त्याग किया और जीवन को ईश्वर का उपहार मान कर जीने की सोची। वे स्नातक व परास्नातक उपाधियों प्राप्त करके एक मानवाधिकार व एन.जी.ओ. बना कर कार्य करने लगे।

निक आज प्रेरक वक्ता, कई कम्पनियों के सलाहकार व अपंग व निराश्रितों के लिए प्रेरणा की किरण है। उनके लेख, निराश लोगो को प्रेरणा देते हैं। उनका संगीत अलबम "एहीट्यूट इज एल्टीट्यूड" धूम मचा चुका है। उन पर लघु फिल्म, फिल्म जगत में कई पुरस्कारों से सम्मानित हो चुकी है। उनकी पुस्तक "लाईफ विदआउट लिम्ब्स" प्रेरणा स्रोत है।

उन्होंने यह साबित कर दिया है -

"मन के हारे हार है, मन की जीते जीत"

## कर्म

शैलेश सोनी  
सर्वेक्षण सहायक



इन्द्रियों को वश में करके,  
कर्म रथ पर हो सवार।  
बन सृजनशील और सदैव ही,  
हो तेरे उत्कर्ष विचार ॥

वैश्विक धरातल पर,  
बन सदैव तु कर्म प्रधान।  
कर्मशील बन आप ही,  
रचले अपना तू विधान ॥

स्वयं को निखार बन,  
प्रखर, प्रवर और अखंड।  
रह हरदम सहज और सरल,  
कदापि मत रख दंभ और घमंड ॥

यही तेरा प्रारब्ध है,  
मत बिता जीवन, बन कर निर्जीव।  
उठ जाग कर्म कर,  
तभी कहलाएगा तू “चिरंजीव”

लेष मात्र भी मत रख,  
संशय, संदेह और अविश्वास।  
कर्म पथ पर हो अग्रसर,  
कर व्यक्त स्वयं पर पूर्ण विश्वास ॥

कर्म से ही है ये जीवन,  
सत्कर्म बनाएँगे महान।  
याद रख कि इस जगत में,  
ये ही दिलाएँगे पहचान ॥

रख अदम्य साहस,  
धैर्य और उत्साह।  
बन मार्गदर्शक दिखलाएँगे,  
ये तुझको आगे की राह ॥

## गाय का महत्व

सुरेश चन्द्र रैगर  
प्रवर श्रेणी लिपिक



एक गाय के शरीर से दूध, घी, बैल और गाय के उत्पन्न होने से एक पीढ़ी में चार लाख पचहत्तर हजार छः सौ (4,75,600) मनुष्यों को सुख पहुंचता है। ऐसे पशुओं को मारे नहीं और अन्य को भी मारने न दें। जैसे किसी गाय से बीस सेर और किसी से दो सेर दूध प्रतिदिन होवे उसका मध्यभाग ग्यारह सेर प्रत्येक गाय से दूध उत्पन्न होता है। कोई गाय अठारह और कोई छः महीने तक दूध देती है, उसका मध्य भाग बारह महीने हुए। अब प्रत्येक गाय के जन्म भर के दूध से चौबीस हजार नौ सौ साठ (24,960) मनुष्य एक बार में तृप्त हो सकते हैं। उसके छः बछियां छः बछड़े होते हैं उनमें से दो मर भी जाये तो दस जीवित रहें। उनमें से पांच बछड़ियां के जन्म भर के दूध को मिला कर एक लाख चौबीस हजार आठ सौ (1,24,800) मनुष्य तृप्त होते हैं। दोनों संख्या को मिला, तीन लाख चौहत्तर हजार आठ सौ (3,74,800) मनुष्य तृप्त होते हैं। दोनों संख्या मिलाने से एक गाय की एक पीढ़ी में चार लाख पचहत्तर हजार छः सौ (4,75,600) मनुष्य एक बार पालित होते हैं और पीढ़ी-दर पीढ़ी बढ़ा कर लेखा करें तो असंख्यात मनुष्यों का पालन होता है। इससे भिन्न बैल गाड़ी, सवारी एवं सवारी उठाने आदि कर्मों से मनुष्यों के बड़े उपकार होते हैं, वैसे भैंस भी है। परन्तु गाय के दूध, घी से जितने बुद्धि के वृद्धि के लाभ होते हैं उतने भैंस के दूध से नहीं होते हैं। इसलिये गाय को आर्यो ने मनुष्य का मुख्योपकारक गिना है और जो कोई अन्य विद्वान होगा वह भी इसी प्रकार समझेगा।

बकरी के दूध से पच्चीस हजार नौ सौ बीस (25,920) आदमियों का पालन होता है वैसे हाथी, घोड़े, उंट, भेड़, गधे आदि से भी हमारे बड़े उपकार होते हैं। इन पशुओं को मारने वालों को सब मनुष्यों की हत्या करने वाले जानिये।

देखो! जब आर्यो का राज्य था तब ऐसे महोपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे, तभी आर्यावर्त या अन्य भूगोल देशों में बड़े आनन्द से मनुष्यादि प्राणी खुशी-खुशी से जीवनयापन करते थे। क्योंकि दूध, घी, बैल आदि पशुओं की बहुतायत होने से अन्न, दूध-अमृत भण्डारों में प्राप्त होते थे।

(गाय की महत्ता का यह संस्मरण "सत्यार्थ प्रकाश" ग्रन्थ से लिया गया है।)

यदि हमारे मन में शांति नहीं है तो इसकी वजह है कि हम यह भूल चुके हैं कि हम एक दूसरे के हैं।

— मदर टेरेसा

## आखिर कितनी निर्भया

शैलेश सोनी  
सर्वेक्षण सहायक



भारत को हम माता कहते,  
मातृभूमि को प्रणाम है।  
आँचल में खेले,  
ये विधाता का वरदान है।।

मर गई अन्तरात्मा,  
खत्म अब क्या होश है।  
नेता संकेत अपनी रोटियाँ,  
जनता क्यूँ खामोश है।।

कैसा है ये चक्रव्यूह,  
कैसे है निकृष्ट विचार।  
बाहर है दरिंदे क्यूँ,  
माँ-बाप आखिर क्यूँ लाचार।।

देवी को दो मान-सम्मान,  
सती, भाव्या, ये ही जया।  
रक्तंजित नन्ही सी जान ,  
पूछे आखिर कितनी निर्भया।।

कैसी ये विडम्बना है,  
वीभत्स ये तस्वीर है।  
धरना था जो माथे पर,  
क्यूँ बिखरा उसका चीर है।।

बस, और ना हैवानियत,  
करो काफिर कुछ शर्मो हया।  
रो रही इंसानियत,  
आखिर कितनी निर्भया।।

जगमग सारी है दुनिया,  
राष्ट्र कहने को स्वतंत्र है।  
गूँजे फिजा में सिसकियाँ,  
राष्ट्र में जननी क्यूँ परतंत्र है।।



## सच्चा आनंद है, शिष्टाचार में

दिनेश सैनी  
सहायक



छोटी-मोटी बातें मनुष्य के जीवन-व्यवहार तथा व्यक्तित्व को बहुत प्रभावित करती है। देखने में महत्वहीन प्रतीत होने वाली हमारी साधारण से साधारण चर्चा भी हमारे महान जीवन निर्माण में असाधारण भूमिका निभा सकती है। जीने का सच्चा आनन्द इसी में है कि कदम-कदम पर शालीनता, विवेक एवं सावधानी बरती जाय। हर क्रिया व चर्चा यत्न व विवेक से करने की बात के परिपालन से जीवन में गांभीर्य, धैर्य व शिष्टाचार पैदा होता है। प्रदर्शन, आडम्बर, होड और तथाकथित आधुनिकता के नाम पर हम अपना व देश का कितना नुकसान कर बैठते हैं, उसका अनुमान शायद ही हमें होता होगा।

शादी-पार्टियों व प्रतिभोजों में देखता हूँ कि बुफे व्यवस्था के बावजूद ढेर सारी जूठन पड़ी रहती है। कुछ लोग शौक से जूठा छोड़ते हैं। कुछ अपनी तश्तरी में भोजन लेते समय ध्यान नहीं रखते और बाद में पूरा खा नहीं पाते। जहां करोड़ों की संख्या में लोग भुखमरी के मारे हों, वहां इस तरह बेहिसाब अपव्यय किसी राष्ट्रीय मानवीय अपराध से कम नहीं है। यदि थोड़ा-सा विवेक व संयम रखा जाए तो स्वास्थ्य व सामग्री दोनों की रक्षा संभव है।

इसी प्रकार बारातों में अति-मस्ती के मद में अधिकतर व्यक्तियों का सारा शिष्टाचार हवा हो जाता है। सभ्य-शिष्ट व्यक्ति भी सामान्य शिष्टाचार का पालन करना भूल जाते हैं। कितने ही व्यक्ति बात-बात में मुंह में गाली या अपशब्द उगलते रहते हैं जिसका प्रायः उन्हें भान भी नहीं रहता। वचन मनुष्य के व्यक्तित्व का दर्पण होता है। यह हमारे संस्कारों तथा विचारों पर निर्भर है कि हम कहां क्या कितना और कैसा बोलते हैं।

व्यक्ति-निर्माण के लिए हमारी भाषा पर ध्यान रखना चाहिए तथा कहीं भी कभी भी अनुचित, अविचारित व अनर्गल शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। शिष्ट व्यक्ति इस बात का भी ध्यान रखता है कि वह कूड़ा-करकट, छिलके आदि कहां फेक रहा है, कहां थूक रहा है आदि। रेल व बस में यात्रा करते समय किसी रोगी, वृद्ध, अशक्त, गर्भवती स्त्री या बच्चा उठाए खड़ी महिला को सीट दे देना न सिर्फ शिष्टाचार अपितु मानवोचित कर्तव्य भी है।

शिष्टाचार के नाते आजकल अभिवादन के तरीकों में अनुचित परिवर्तन आया है। पहले बड़ों को झुक कर प्रणाम या चरण स्पर्श किया जाता था मगर आजकल उनके प्रति वैसा आदर भाव नहीं दर्शाया जा रहा है। नमस्ते, नमस्कार, जय-जिनेन्द्र या अन्य अभिवादन की बजाय हाय, हैलो, बाय आदि का धड़ल्ले से औपचारिक प्रयोग हो रहा है। हमें हमारे शिष्टाचार प्रकट करने के श्रेष्ठ भाव-भरे व आत्मीय तरीकों को तिलांजलि नहीं देनी चाहिये। इस प्रकार अन्य अनेक छोटी-छोटी बातें हो सकती हैं जो हमें संस्कृत व शालीन या असंस्कृत, विकृत व अशालीन बनाती हैं। विनय, अहिंसा, शील तथा विवेक जैसे सद्गुणों से व्यक्ति



अपने भीतर बाहरी व्यक्तित्व को अत्यंत शालीन, कुलीन, स्तरीय तथा उत्तम बना लेता है। विवेकशील का प्रत्येक क्रिया—कलाप व वचन—व्यवहार साफ—सुथरा, नपा—तुला एवं युक्ति—युक्त होता है।

एक पढ़े—लिखे, शिक्षित सभ्य व संस्कारित मनुष्य को चाहिये कि वह शिष्टाचार के नियमों, सदाचार के मानदण्डों, सामान्य कर्तव्यों एवं नागरिक आचार संहिताओं का समुचित परिपालन करे व करवाएँ। छोटी—छोटी बातें जीवन को पूर्णता प्रदान करती है। पूर्णता कोई छोटी बात नहीं है। एक छोटा—सा कांटा रोक सकता है, चलते राहगीर को, छोटी—सी चिंगारी नष्ट कर सकती है इस विश्व मंदिर को। एक छोटी सी कमी भी इंसान का पतन कर सकती है। छोटी—सी जुबां भी कत्ल करा सकती है, इस दुर्लभ शरीर का।

### सफलता

- समस्त सफलताएँ कर्म की नींव पर आधारित होती हैं।
- सफल वयक्ति वह जो खुद पर फेंकी गई ईंटों से मजबूत नींव बना सकता है।
- अक्सर लोग प्रयास करना छोड़ देते हैं जब वे मंजिल के सबसे ज्यादा करीब होते हैं।
- चींटी से अच्छा उपदेशक कोई और नहीं है। वह काम करते हुए खामोश रहती है।
- यदि कोई व्यक्ति अपने धन को ज्ञान अर्जित करने में खर्च करता है तो उससे उस ज्ञान को कोई नहीं छीन सकता। ज्ञान के लिए किए गए निवेश में हमेशा अच्छा प्रतिफल प्राप्त होता है।
- सफलता वह सैभाग्य है जो कि उच्चाकांक्षा, साहस, मेहनत और प्रेरणा से प्राप्त होता है।
- सफलता हमारा परिचय दुनिया से कराती है।
- असफलता हमें दुनिया का परिचय करवाती है।

ओ. पी. सेनी  
अधिकारी सर्वेक्षक

## टीचर्स

विशाखा पुत्री श्री जी.पी.चौधरी,  
सर्वेक्षण सहायक  
क्लास – 9वीं



क्या थे वो दिन स्कूल के मस्ती भरे दिन फूल से,  
नहीं चाहता था बैठना कोई भी SST की क्लास में ।  
सब करते थे गपशप धीमी-सी आवाज में  
SST ने हमें बहुत पकाया,  
पर Sir ने हमें बहुत ही अच्छा पढ़ाया ॥

Maths के टीचर की तो बात ही कमाल थी,  
उन्होंने जो पढ़ाया वो भी एक मिसाल थी ।  
Maths के आकड़ों ने हमें बहुत सताया,  
पर Sir ने हमें इन सबसे बचाया ॥

संस्कृत के Period में जब Mam कारक समझाती थी,  
एक बार बताने से सारी बात दिमाग में घुस जाती थी ।  
Sports Day के दिन Mam से बात करने के सब शौकीन थे,  
पर class में जब Mam Question पूछती तब सब डब्बा गोल थे ॥

Hindi वाली Mam ने हमें क्या शानदार पढ़ाया,  
उनके जैसा टीचर कोई नहीं आया ।  
Hindi की मात्राओं में सब उलझ गए थे,  
पर आपके आते ही सब सुलझ गए थे ॥

“Insight” Book ने हमें बहुत Tension में डाला,  
पर आपने सब कुछ Easy करके हमको समझा डाला ।  
English का Basic आपने Clear करवाया था,  
बचपन से लेकर आप जैसे Teachers ने ही हमें पढ़ना सिखाया था ॥

Science की तो बात ही निराली थी,  
इसने सबकी हालत बहुत बुरी कर डाली थी ।  
Physics, Chemistry, Bio को आपने Interesting बनाया था,  
लड्डुओं का example देकर void का मतलब समझाया था ॥

Teacher ने Vishakha की जगह Vanshika बोला बहुत बार,  
पर हमें Teachers बहुत बढ़िया मिले हर बार ।  
हमारा ये नसीब हुआ कि हमें आपने पढ़ाया,  
वरना सबका ऐसा नसीब कहां कि वो पढ़ पाया ॥

End में यह कहना चाहती हूँ कि  
आपने हमें जीने का तरीका सिखाया ।  
बड़े होकर कैसे भूल जायेंगे कि आपने हमें पढ़ाया .....



## हिन्दी पखवाड़ा एवं पुरस्कार वितरण समारोह



वाद-विवाद प्रतियोगिता एवं पुरस्कार वितरण समारोह



श्री एम.सी. गौड़, निदेशक पुरस्कार प्रदान करते हुए



श्री रविन्द्र कुमार, उप महासर्वेक्षक निदेशक पुरस्कार प्रदान करते हुए



ले. कर्नल एस. शेखावत, एस. एस. पुरस्कार प्रदान करते हुए



श्री एम.सी. गौड़, निदेशक संबोधित करते हुए



प्रतिभागी हिन्दी प्रतियोगिता में भाग लेते हुए

## वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिताएं



निदेशक श्री एम.सी. गोड़ द्वारा उद्घाटन



मनोरंजन क्लब की आमसभा



वॉलीबाल मैच



रस्साकसी प्रतियोगिता



स्लो साईक्लिंग प्रतियोगिता



गोलाफेंक प्रतियोगिता

## राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर प्रदर्शनी का आयोजन



श्री ओ. पी. त्रिपाठी, अपर महासर्वेक्षक, पश्चिमी क्षेत्र, जयपुर द्वारा विज्ञान प्रदर्शनी का उद्घाटन



हवाई फोटोग्राफ एवं स्टेरियोस्कोप का प्रदर्शन



पुरातन मानचित्रों का प्रदर्शन



मूक बधिर शिक्षण संस्थान के विद्यार्थी



वर्तमान मानचित्रों का प्रदर्शन



भारतीय सर्वेक्षण विभाग के 1767 से अब तक की उपलब्धियों व परियोजनाओं का प्रदर्शन



Dual Frequency जी.पी.एस. यंत्र



टोटल स्टेशन यंत्र



स्कूली विद्यार्थी विभिन्न यंत्रों की जानकारी प्राप्त करते हुए



प्लेन टेबलिंग



पैराबोला डिस्प्ले



लेवल मशीन



## अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन



ध्यान मुद्रा योग



अनुलोम –विलोम योग



योग की साम्य स्थिति



ताड़ासन योग



ऊष्ट्रासन योग



योगाचार्य डॉ. राजेश कुमार, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सक को प्रशस्ति पत्र भेंट करते हुए

## सेवानिवृति समारोह



श्री ओ. पी. त्रिपाठी, अपर महासर्वेक्षक सेवानिवृत्त कर्मचारी का माला एवं साफा पहनाकर स्वागत करते हुए



श्री एम. सी. गौड़, निदेशक सेवानिवृत्त कर्मचारी को उपहार भेंट करते हुए



ले. कर्नल सिद्धार्थ शेखावत, अधीक्षक सर्वेक्षक सेवानिवृत्त कर्मचारी को प्रतीक चिन्ह भेंट करते हुए



श्री रोहित अग्रवाल, उप अधीक्षक सर्वेक्षक सेवानिवृत्त कर्मचारी को प्रतीक चिन्ह भेंट करते हुए



मनोरंजन क्लब में विदाई समारोह पार्टी



सेवानिवृत्त कर्मचारी के साथ क्लब के सदस्यों का ग्रुप फोटो

## अन्य गतिविधियाँ



संविधान दिवस पर शपथ ग्रहण



स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान सफाई करते हुए



स्वतंत्रता दिवस पर श्री एम. सी. गौड़, निदेशक झंडारोहण करते हुए



श्री एम.सी. गौड़, निदेशक इंडो-पाक द्वि-वार्षिक मीटिंग में भाग लेते हुए



ले. कर्नल सिद्धार्थ शेखावत, अधीक्षक सर्वेक्षक इंडो-पाक क्वार्टरली बॉर्डर मीटिंग में भाग लेते हुए



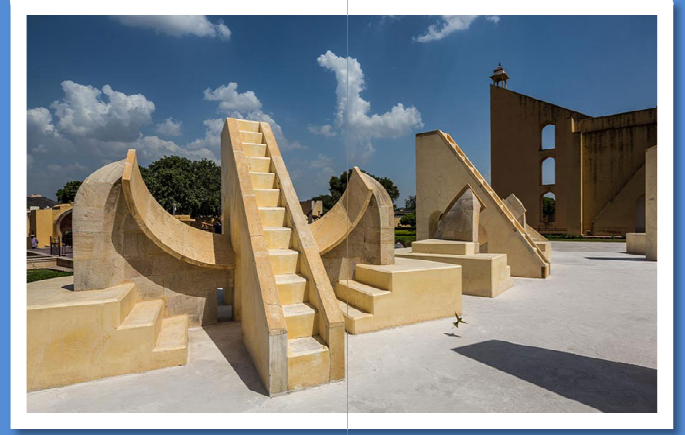
इंडो-पाक सीमा सर्वेक्षण का संयुक्त निरीक्षण



इंडो-पाक सीमा सर्वेक्षण निरीक्षण के दौरान दोनों पक्षों की संयुक्त बैठक



जलमहल



जन्तर मन्तर, जयपुर



नाहरगढ़ फोर्ट



अल्बर्ट हाल



जयगढ़ फोर्ट

राजस्थान भू-स्थानिक आंकडा केन्द्र के निदेशक श्री एम. सी. गौड़ के निदेशन में प्रकाशित

पश्चिमी मुद्रण वर्ग, भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा मुद्रित